पकरिलीन्ह दोऊ कर ताके। मुष्टिकास्य मारी इक वाके ॥ पुनि कह ऐसि ढिठाई तेरी। नेक भीति कीन्हीं नहिं मेरी ६४ डाकू शिथिल चोट कर गाढ़े। संगी चित्रपूतरी ठाढ़े ॥ डाकू जब मूर्च्छा गत भयऊ। भगवत मूर्त्ति शरण को गयऊ ६५ अस्त्र शस्त्र आगे धरिदीन्हे। प्रेम समेत चरण गहि लीन्हें ॥ धरिउर पग त्यागे नाहीं। भयो भक्त तजि जग ममताहीं ६६ और चरित्र एक अब गाऊं। भगवत लीला चित्त गहाऊं। लीलारास कोउ करवायो। कालिन्दीके कूल सुहायो ६७ काली दमन चरित के काला। लोगन सों पूंछो यह हाला ॥ कमर कसत भगवत बपु देखत। काफांदहिं कालीदह पेखत. ६८ भगवत मूरतिहू के काना। परी भनक वह जौन बखाना ॥ बोले सही फांदिहैं यामें। यह कहि कूदि परे यमुना में ६९ ऐसो पकरि एक अहि लाये। विंशति मनुज न उठत उठाये ॥ देखि मनुज वह अचरज माना। हरि प्रकाश लखि चौंकि भुलाना ७० मुर्च्छित भयो ध्यान हरि पायो। ध्यानमाहँ तन दशा भुलायो ॥ मुर्च्छासों जागो जिहिकाला। चरणधरे निजमानस हाला ७१ भगवत चरण धारि उर माहीं। जगसुख त्यागि दिये पुनि ताहीं ॥ भगवत भक्तभयो तिहिकाला। लीजानुकरणही सोहाला ७२ या प्रकार बहु चरित सुहाये। विश्वासी पुरुषनके गाये ॥ जियालालमनकरु विश्वाशा। त्यागौ जगतअसतकीआशा॥ ७३ भये भक्त या निष्ठा जोई। बर्णन करौं कछुक मैं सोई ॥ प्रथम अली भगवान कि गाथा। बरणौं वन्दि चरण रघुनाथा ७४ प्रथम भक्त श्रीराम कहाये। एक समय बृन्दाबन आये ॥ तहां रास देखाइन जबहीं। भूले इष्ट उपासन तबहीं ७५ कृष्ण भजन पूजन मन लाये। तिनके गुरू जानि यह पाये ॥ वृन्दाबन आके गुरु येहा। भई शिष्य निज में सन्देहा ७६ आजु रासलखि कृष्णहि गावैं। कालिह मतान्तर कोऊजावैं ॥ चाहिय मन इक ओर लगावै। सबै तर्कना दूर बहावैं ७७ देखि शिष्य

गुरु चरणन लागा। अस्तुति कीन्ह सहित अनुरागा॥ कह
गुरु स्वामी तुम मम सोई। या में भेद और नहिं कोई ७८
परमन हरि लीन्हो नँदलाला। बरबस कछु उपाय नहिं चाला॥
देखि तुम्ह दृढ़ प्रीति ललामा। भक्ति दृढ़ाइ गये पुनिधामा ७९
कथा विपुल बिठ्ठलकी गावों। जिनकीर्त्तन करि हरि रतिपावों॥
रहे शिष्य स्वामी हरिदासा। निधबनमें जिनकेर सुबासा ८०
विष्णु भक्त माधूर्य्य उपासक। भे देहान्त स्वामि हरिदासक॥
तिनके चरण बियोग बिचारी। सहत शोक अतिही उरभारी ८१
रासारंभ एक दिन भयऊ। भक्त न बोलि इनहुँ को लयऊ॥
जाइ राम देखन तहँ लागे। भगवत रूप देखि अनुरागे ८२
नृत्य कीर्त्तन हरिको देखी। गोमन भाव समाइ बिशेखी॥ भग
वत रूप मग्न भे जबहीं। गुरुके दर्शन पाये तबहीं ८३ ऐसो
चित्त लगो तिनकेरा। नित्य बिहार मिलेसब बेरा॥ जैसे सरि-
ता उमगि अपारा। जाइ समुद्रन बहुरिउबारा ८४॥
राम राय राठौर बखाना। पुत्र नृपति खेम्हाल सुजाना॥
परम भक्त भो भगवत केरा। अगदी भक्ति देशसब बेरा ८५
भक्ति बिहीन निकारोदेशा। किय उपदेश योग उपदेशा॥
भक्तनको पदवी बड़ि दीन्ही। भक्ति वृद्धि पूरण तिन कीन्ही ८६
राजा शिवि सम भक्त कहायो। भरत समान प्रतापी गायो॥
जिनको पुत्र पकरि हरिलात्रा। कर्ण पकरि बहु नाच नचात्रा ८७
जिन गन्धर्व ब्याहकी रीती। कन्या हरिको दई सप्रीती॥
ताको यह वृत्तान्त सुहायो। शरद पूरणाको दिनआयो ८८
जानिशिरास कीन्ह ब्रज चन्दा। रासकरायो नृपसानन्दा॥
भगवत रूप चरित्र निहारी। राग रङ्ग नृत देखि बिहारी ८९
भये प्रेम बिह्वल नृपभारी। मंत्रि बिप्र सों कहत बिचारी॥ काह
भेंट करिये हरि काहीं। मंत्री कहो शोधि मो पाहीं ९० मंत्री
कहो सुनहु महराजा। जोप्रिय होइ देउ हरिकाजा॥ सुनिनृप
मन बिचारि बच आदरि। म्हाको छेम्हा की प्रिय डावरि ९१

यहकहि नृपति महलमें गयऊ। कन्या को आभूषित कयऊ ॥ करि शृंगार तहां पुनि लाये। ब्याहरीति गांधर्व बनाये ९२ भेंट बहुरि भगवत हित कीन्हा। धनअसबाब बिबिधिबिधि दीन्हा॥ ऐसी द्रव्यदई नरराई। कन्या देह अंत लगिखाई ९३ रामराय कोचरित सुहायो। जियालाल द्विज बरणि सुनायो॥ याको पढ़ै सुनै जो कोई। हरिप्रसन्नताऊारहोई ९४॥

अबबरणौं भक्तन सुख दाई। खड्गसेनकी कथा सुहाई॥जासु ग्वालियर बासस्थाना। निष्ठीरास भक्त भगवाना ९५ लीला दानादिक जिन गाई। बिरचेबहुपद ललित बनाई॥ जन्म प्रयन्तरहे हरिओरा। नेक नहीं कबहीं मन मोरा ९६ हरिके चरित सुनै अरुगावैं। नेक नहीं जग के सुख भावैं॥ दिन प्रतिलीला रास करावैं। देखि चरित्र मगन ह्वै जावैं ९७ प्रीतम प्रिया भाव अवलोकी। यकटक रहे पलकचख रोकी॥ दीन्हें चरणन प्राण लगाई। मुख्यरास में गये समाई ९८॥

बल्लभ कथा कहौं अबनीके। शिष्य भट्ट नारायणजीके॥ प्रेमी भक्तभये संसारा। परमानन्द प्रेमप्रति पारा ९९ रासमाहँ लीला हरिगावैं। ललित बिशाखा रूप बनावैं॥ भगवतको या भाँति रिझावैं। तिनतद्रूप रूप दरशावैं १००॥

नाथ भट्टकर उत्तम चरिता। बरणन करौं मोदकी सरिता॥ सुतगोपाल भट्ट के सोई। ऊंचे गाँव बास निज होई १०१ वेद पुराण शास्त्र के ज्ञाता। तंत्र शास्त्र में अति विख्याता॥ अभिप्राय सब को जो सारा। भगवत भक्ति प्रेम परचारा १०२ दृढ़ बिश्वास भक्ति में कीन्हा। रचनाकाव्य मधुर हरिचीन्हा॥ बरणेरस शृङ्गार अनूपा। पूरण चित्त भये तद्रूपा १०३ लीला रास बनावैं नीके। निष्ठारास प्रेम अति जीके॥ रासोपासन में जनजेते॥ इन समान बरणे नहिं तेते १०४ लीलानुकरण भक्त अपारा। जियालाल पावै किमि पारा॥ मशक अन्त

आकाश कि पावै । पंगु कि गिरवर जाइ मँझावै १०५॥

इतिश्रीभगवद्भक्ताऽनुरागदायकजियालाल जन्माग्रेणविर
चितेचतुर्विंशतिनिष्ठामध्येनवमलीलानुकरणनिष्ठा
यांषडभक्तकथावर्णनोनामभक्ताम्बुनिधा
वेकादशस्तरंगः ॥ ११ ॥

दो० । दशमनिष्ठ वर्णनकरौं दयाअहिंसाजासु । कथाङ्कभक्तन की सुभग पुण्यपुञ्जहै तासु १ श्रीहरिके पुष्कर चरण स्वस्ति करेखानौमि । करि प्रणाम अवतारहरि धन्वन्तरिजोसौमि २जिन जगके उद्धारहित दयाकरी गुणि खेद । नाश महारुज के हितै प्रगटो आयुर्वेद ३ चौ० ॥ भगवत रूप दयाजगमाहीं । दया समान धर्मकछुनाहीं ॥ जाके हृदयदयाकर बासा । ताकर धर्म्म सदापरकाशा ४ जाके हृदय दयानहिं होई ॥ ताके धर्म प्रकाश न कोई ॥ दयाअहिंसा के समकोई । कहत पुराण धर्म नहिं होई ५ दो० । दया साधुसेवा भवन मुख्य धर्म हैं तीन ॥ दया अहिंसा अङ्ग है हरि नारदकहँ दीन ६ चौ० ॥ दयारूप अबक हौं बखानी । जो सुनि होइ सकल भ्रमहानी ॥ काहूको दुख देखै जबहीं । द्रवै चित्त अवलोकत तबहीं ७ जबलगि दूरिहोइ दुखनाहीं । तब लगि दुखी रहै मनमाहीं ॥ दूरिकरै दुख शक्ति समाना । धनबल बुद्धि पराक्रम नाना ८ मधुरबचन सब सों पुनिभाषै । नाशै क्रोधकरन मन माषै ॥ दया एक संसारीगाई । एक पारलोकिकी सुहाई ९ जाहि कुपंथ चलतलखि पावै । ताहि सुमारगकोदरशावै ॥ नर्कादिक वरणैदुख भारी । ताहि दुःखसों लेइउबारी १० दया प्रकाश सदा उर जासू । महिमा वरणि सकैको तासू ॥ कहौं एकइतिहास बुझाई । जो सुनि मनत्यागै कुचिताई ११ साहूकार एकधनवाला । भयोदरिद्रीपरि दुकाला ॥ चारियज्ञ प्रथमहिंकरि राखा । तासों एक ऋषेश्वरभाखा १२ धर्म राजके निकट सिधाओ । यज्ञ एक को फललैआवो ॥ सुनतसाहु कीन्हीं मन आसा । भोजन सामग्री नाहिं पासा १३ काले

जैयैंकरी बिचारा। सामग्री कछु भवन निहारा। कीन्ह सिद्धभोंजनहित लाई। तबलगि एक शुनी चलिआई १४ बच्चाजनी तुरित की जानी। साहूकार दयाउर आनी ॥ चतुर्थांश भोजन तिहि दीन्हा। तासों तृप्तनाहिं जबचीन्हा १५ दीन्हो दूसर तीसर भागा। क्षुधित जानिदिय सह अनुरागा॥ भोजन सब दै बारि पियाई। पहुँचे धर्मराज ढिगजाई १६ तिनसों या बिधि बचन सुनाये। एक यज्ञ फल हित हम आये॥ धर्मराज बोले सुखपाई। साहूकार सुनौमनलाई १७ पांचयज्ञकीन्ही तुमभारी। तामहँ अच्चय एक तुम्हारी॥ कौनयज्ञ फल आशाहोई। आयसु देउदेइँ हमसोई १८ साहसुनतमन अचरजमाना। चारि यज्ञ कीन्ही हमजाना ॥ पंचम यज्ञ कबहिं हमकीन्हा। अक्षयजासु कहत प्रभुचीन्हा १९ धर्मराज बोले मुसुकाई। सुनौ यज्ञकीन्ही जो भाई॥ भोजन शुनी काहँ करवाये। आप क्षुधित ममनिकट सिधाये २० निजदुखदै परकोसुखदेई। तीनौंलोक जीति सोलेई॥ दया समान धर्म नहिं दूजा। घटघट श्रीनारायण पूजा २१ बिद्या बिनय सहित द्विजमाहीं। गबिहस्तिनि श्वपाक सुनि काहीं॥ समदरशी पण्डितहै सोई। इनआदिक समान लख जोई २२ भगवत सबमें आपु बिराजैं। नाना रूप भेष जग साजैं॥ तासों दया सबन में कीजै। भगवत बासदेह गुणि लीजै २३ हिंसामन कबहूँ नहिं लावै। मन बचकर्मन जीवसतावै॥ ईश्वर जीवबनाये सबहीं॥ तिनसों द्रोहकरै नहिं कबहीं २४

दो०। बासअहिंसा जब करै हिये मांझमें आय। भगवत रूप बिलोकई तबपूरुष सुखपाय २५ यानिष्ठा जेभक्तहैं बरणौं तिन के नाम। जियालालहरिभक्तधनि कीरतिलालित ललाम २६॥

चौ०॥ कथा मयूरध्वजकी गावौं। जासु कृपाहरिपदरतिपावौं॥ सुकृत मूरति नृपति सुजाना। दयानिधान भक्तभगवाना २७ कीन्ह युधिष्ठिर जबमख बाजी। अश्वसंग अर्जुन दलसाजी॥ चलेअमित जीते मगराजा। मणिपुर जीति पुत्र निज साजा२८

अग्र प्रमुक्त अश्व पुनि धावा । कटक महान पृष्ठ चलि
आवा ॥ तहँबर्हिध्वज यज्ञ तुरंगा । रक्षत ताम्रध्वज रणरंगा २९
रत्ननगर सोत्यागा जोई । तिहि समीप आवाहय सोई ॥ ताम्र
ध्वज अर्चित हय देखी । निज प्रधान सोंकहो बिशेखी ३०बांचहु
पत्र मंत्रि बरजाई । किहिमख हेतमुक्त हयराई । सुनि बहुलध्व-
ज हय गहि लीन्हा । बांचि पत्र पूरण कहिदीन्हा ३१
सुनि ताम्र ध्वज क्रोध बढ़ाई । तत्क्षण गहिलीन्हो हयराई ॥
पांडव हय रक्षित यदुराई ।प्रद्युम्नार्जुन बहु कटकाई ३२ हँस ध्वजा
नुशाल्व सुबीरा । अनिरुध कर्ण पुत्ररणधीरा ॥ पाल्य मान
गत भय गहि लीन्हा । निजदल बोलि इबिधि कहि दीन्हा ३३
दो० । सप्तयज्ञ कीन्ही पिता अष्टम ह्वैहै येह। अष्टमपायतुरंग यह
सहित कृष्ण युतनेह३४चौ०॥कृष्णबिहीनभयेमखसाता।अवशि
कृष्णह्वैहै सुखदाता॥हरिसन्मुखहोइयदृढ़ठाढ़े।ह्वैहैमहाबुद्धिरण
गाढ़े ३५ सुनि बहुलाश्व कहन इमि लीन्हा। सुनहु नृपतिकिमि
शंका कीन्हा ॥ दलअपारतव अर्जुन थोरा । लेहैंभ्रांपिदलहि
बरजोरा३६बभ्रुबाहनहिजानकिनाहीं।जोंकरदेतपितातवकाहीं॥
अधन अपुष्ट न पौरुष गाता । तुमसों युद्ध करहिं किमिताता
३७ सुनि ताम्रध्वज कहाबखानी । मंत्री तुम यहबात न जानी॥
अपर बीरगणना नहिं धारी । बभ्रुबाहकर्ण जबलभारी ३८
कहो निशा नारद सुख धामा । नरनारायणय अर्जुन श्यामा ॥
प्रद्युम्नानिरुद्धयुयुधाना । कृष्णसमान सुभट रण जाना ३९ म-
हा युद्ध ह्वैहै इहि ठामा । रचिये ब्यूहअर्द्ध शशि नामा ॥ पाञ्च
जन्य स्वनकर भगवाना । देवदत्तरवजिष्णु सुजाना ४० आ-
वत हैं हयार्थ भट धाये । शस्त्र पाणि सबरथी सुहाये ॥ यहक
हिभये युद्ध हित ठाढ़े । देखो तिनहिं कृष्ण रणगाढ़े ४१ कहँ
अर्जुन सोहँसि जगबन्दन । लखहु मयूरध्वजे को नन्दन ॥
तबमख बांजि गह्यो बर जोरा । अत्रयुद्ध होवै अति घोरा ४२
मोचय अश्व जोर अति करिकै । जिमि हरि वेद शंख सों अ-

रिकै ॥ प्रद्युम्नादि करहिं संग्रामा । तुम मम सहतजि कै रण
ठामा ४३ दीक्षित याको पितुहै जहवाँ । कूल नर्म दा च-
लियेतहवां ॥ सत्यबाग अतिही भट भारी । अर्जुन युद्ध न क-
रिय बिचारी ४४ गृद्धब्यूहरचिये चणएहा । याके सुभटकाल
सम देहा ॥ तिनसों करहिं मामका युद्धा । हमहूँ युद्ध करहिं
अति क्रुद्धा ४५ तुमहौ पार्थ श्रांतरण जुटिकै । लरहिं सपुत्र
पौत्र हम लुटिकै ॥ सब बीरन कर होइ बिनाशा । यहहम तुम-
सों करत प्रकाशा ४६ यह कहि माधव निज रथ गयऊ । गृद्ध
ब्यूहरचि शोभित भयऊ ॥ लखे रथस्थ हरिहि सब राजा । गृद्ध
ब्यूह मुखमध्य बिराजा ४७ पुनि अनुशाल्व ग्रीवमाधिराजे ।
हंसध्वज नृप नेत्र बिराजे ॥ पच्चन में यदु नंदन दोऊ ।
अनिरुध प्रदुमन राजे सोऊ ४८ बर्द्धन भोज सात्यकी दोऊ ।
दुहु पादन मधि शोभित होऊ ॥ यौवनाश्व घनवर्ण समेता ।
रक्षा ब्यूहर हे चित चेता ४९ हृदय मध्य अर्जुन रण धीरा ॥
तिन के संगरहे बहु बीरा ॥ बभ्रु बाहकर्णज वर बीरा । चंचुस्थितरह
तेज गंभीरा ५० एतेबहु बीरनको देखी । देखि अपरपार्थिवन बि
शेखी ॥ ताम्रध्वज आनिन्दित हाला । कृष्णहिंहांकदीन्ह तिहि
काला ५१ यज्ञ बाजि हमहींगहि लीन्हा । जोहरितुम रण उद्यम
कीन्हा ॥ तौ राखिय अबपारथ काहीं । बाजिमदीयगहो किमिनाहीं
५२ तुम बिन अपर शक्ति है नाहीं । जोसंग्राम करै हमपाहीं ॥
शारँग धनुष सुदर्शन धरिये ॥ तुमहिं बिलोकिन हम भय करिये
५३ यह कहि पारथ के दल ओरा । अर्द्धचंद्र शर छांड़े घोरा ॥
सप्त तिशर अर्जुनके मारे । तीनि बाण केशवहि प्रहारे ५४ पांच
बाण दारुक अँगहयऊ । चारिबाण चहुंअश्वनदयऊ ॥ सात्यकिअंग
हनेनव तीरा । अष्ट बाण कृत बर्मा बीरा ५५ हनेसहसशर प्रदुमन
अंगा । अयुत बाण अनिरुद्ध अभंगा ॥ तबअनिरुद्ध क्रोध अति
कीन्हा । ताम्रध्वजहिं हांक रण दीन्हा ५६ ताम्रध्वज रहिये रण
माहीं । अबदेखो मम पौरुषकाहीं ॥ तजहु अश्व ममसहौ प्रहारा ।

अबको तुमको राखनहारा ५७ताम्रध्वज सुनि बोलेबानी। पिता
तुम्हार मदन हम जानी॥ बाणासुर कन्या पति आपू। किहि
बिधि सहौ युद्ध करतापू ५८ बाणासुरं सम हम नहिं करिहैं।
बाणन मारि समर भूईरिहैं॥ अबन बचहु रचा निज करिये।
कह अनिरुद्ध समर चित धरिये ५६ पण्डित बहुनहिं करत बड़ाई
तुम बहु बर्णत निज मनुसाई॥ अस कहि तजे बाण अनिरुद्धा
प्रलयानल समान अति क्रुद्धा ६० हने सुचित्र अंग शरनाना।
तब सुचित्र किय क्रोधमहाना॥अनिरुध अंगनवाति शरमारेपांच
बार शर अपर प्रहारे ६१ अनिरुध तजे बाण बिकराला शिखी
समानकियो तिहिहाला॥ चारि बाण चारौ हय मारे॥ एकबाण
सब रथी सँहारे ६२ बधेअपर दारुण बहुबीरा। अनिरुध कीन्हो
क्रोध गँभीरा॥ भयो कटक अनिरुध शरभिन्ना। भुजांगुली न
खकरभे छिन्ना ६३ बक्षस्थल अरु अस्थि समेता। शिररदनेत्रपरे
रण खेता॥ भ्रुवश्मश्रुकोटि यदुनन्दा। परदलहति अति लहो
अनंदा६४समर सुचित्र मध्यरतिवारा। अक्षौहिणीतीनिदलमारा॥
हनो चतुर्विध दलतिहि काला।शिखि विधूम समतेज बिशाला
६५ अपर सैन्य पुनिकीन्ह सँहारा। सम पतंगकार्मुक धरजारा॥
रथ विभिन्न गजकानन गयऊ। सारथबीर करणीभटलयऊ ६६
पुनि सुचित्र छांड़बहुबाना। खण्डित किय अनिरुधकरयाना॥
तजिरथ अनिरुधले धनुधाये। तबसुचित्रबहुबाण लगाये ६७
विरथ ताम्रकेतुहिकिय हाला॥ दोनौ भये विरथ तिहिकाला॥
तब अनिरुद्धहि मूर्छित कीन्हा। पांडव अनीकाह दुख दीन्हा
६८ पांच बाण प्रद्युम्नहिं मारे। पुनि याविधिसों बचन उचारे॥
क्यों नहिं युद्ध करत हरिआई। उनहींसों हम चहत लराई ६६
सुनिवृषकेतु क्रोध करि धाये। हतिइषु शररथ काढ़िखसाये॥
चढ़िरथ अन्य चहत शरमारा। सोऊ रथ बृषकेतुसंहारा ७०
जारथ चढ़ि सुचित्र रण आवै। सोई हति वृषकेतुखसावै॥ रथ
शततीनिद्लेइमियोधा। चढ़ो अन्य रथ नृपतिसक्रोधा ७१ ह:

तिशर कर्णज कहँमहि डारा ॥ पुनि अनुशाल्व मूर्छिमहिपारा॥
यौवनाश्व कहँ मुर्छित कीन्हा ॥ तब सात्यकिर रणउद्यम
लीन्हा ७२ सप्त बाण मारेहयचारी । शंखनाद कीन्हो पुनि
भारी ॥ तबहिंसुचित्र कठिनशरमारा। मुर्छितसात्यकीहिमहिपा-
रा ७३ कृतवर्मा पीड़ितशरघाता ॥ पुहुमी पूरित वीर लखाता ॥
मुर्छितपरेवीर महिकैसे । चीण पुण्यस्वर्गीमहिजैसे ७४ बभ्रुवा-
ह नहिं आवत देखी। हर्षित कहो सुचित्र विशेखी ॥ आयेयुद्ध
करन हमजाना । तिष्ठमानहोइयचण माना ७५ अर्जुन सु-
वन हने शरपांचा। सप्त खण्ड नृप सुत किय सांचा ॥ विरथ
बभ्रुवाहन कहँ कीन्हा । मुर्छित बहुरि डारि महि दीन्हा ७६
तिष्ठ कृष्ण कहि सन्मुख धायो ॥ बीरन देखि महा भयपायो॥
वाहन छोंड़ि भगीबहु सैना ॥ पीड़ित हंसध्वज गुण ऐना ७७
अस्त्र शस्त्र ताजि भागे वीरा । रुधिर सरित में छिपे अधीरा ॥
मुर्छितभूलि अपनपौ गयऊ। तबरणहांक धनंजय दयऊ ७८
खैंचत धनुष समर महि आये। माभयकीजिय वचनसुनाये॥
कहत वीर मुर्छित दुखभाजी ॥ काह करब अर्जुन लै बाजी ७६
चहत यज्ञ बध गोत्र निवारणं। हम सबबधे जाहिं तिहि कार-
ण ॥ ऐसी पुण्य करहुलैकाहाँ। याबिधि वचनकहतभट ताहाँ८०
सबहि राखि अर्जुनगेआगे। अंमसुचित्र वाणनवत्यागे॥ लगे
वाण वचस्थलजाई। गिरतभयोसो भूमितवाँई ८१ चढ़ोसुचित्र
अन्यरथजाई। पारथपर वरषाशरलाई॥ कीन्हकिसिटीहूशरबरषा।
कियोअदृश्यसुचित्रसहरषा ८२ अर्जुन शंखसहर्षबजायो। तिष्ठ
सुचित्रहि बचन सुनायो ॥ तिलसमकाटि तस्यरथडारा। सहय
सूतयुतकीन्ह सँहारा ८३सरुटसुचित्रअन्यरथआयो। अर्जुनहय
सारथीनशायो॥ पुनिअर्जुनसों बचनबखाना ।अबतवरथसारथी
नशाना ८४ कहँजैहौ निजपुरलैजैहौ। हंससमेतहर्ष उरछैहौ ॥
सुनिअर्जुन क्रोधातुरआसू। भग्नसदेहकियोस्यतासू ८५ दो०।
थिरतापावसुचित्रनहि, अर्जुनके संग्राम ।एकसहसस्यन्दनदले

बढ़ोक्रोधउरधाम ८६ चौ० ॥ चढ़ोसुचित्र अन्यरथमाहीं। शरन बिबेधार्जुनतनकांही॥ मुर्च्छितभे अर्जुन तिहिकाला। देखत कृष्णसकल यहहाला ८७ मुर्च्छातजिअर्जुन तिहिकाला। मारे शर सुचित्रतनहाला॥ पुनिताम्रध्वज अर्जुन याना। बाणन हतिदाक्षिण दिशि आना ८८ योजन भरिहटाइरथ दीन्हा। लखि अर्जुन अतिहीरिसकीन्हा॥ स्यन्दन हते तीनिशर आसू। गगन उड़ाइ गयो रथ तासू ८९ गर्जतभे पुनि सिंह समाना॥ अमित वाहिनी कीन्ह मसाना। वहुरि भूमिताको रथआयो॥ अर्जुन पर बाणन झरिलायो ९० दोनौ चित्र अस्त्र हैं जानत। मंडल चित्रदोउ उरठानत॥ वीरश्री शोभितहैं दोऊ। त्यागत नहीं महारण सोऊ ९१ द्विशतअक्षौहिणि अर्जुनमारा। प्रयुत सुचित्र कीन्ह संहारा॥ दोऊसमर परस्पर करहीं। जयकांक्षा दोऊ चित धरहीं ९२ गोध्वज नृप अर्जुन कर काटा। तब अर्जुनबहुशायक छाँटा॥ जिहि रथचढ़ि सुचित्रचलि आवै। सोई अर्जुन मारिखसावै ९३ स्यन्दनसहस काटिपुनिडारा॥ याविधि कीन्हो युद्ध अपारा। उभय युद्ध कीन्हो याभांती॥ गनी नसक्ष दिवस दिनराती ९४ निशिदिन युद्ध देखिसबबीरा। भय विस्मय पाये रणधीरा॥ गहि सुचित्र अर्जुन रथलीन्हा। गमनगगन मण्डलमें कीन्हा ९५ दूरिजाइ भूतल तजि दीन्हा। धारिस्वकर देखत हरि लीन्हा॥ लखि ताम्रध्वज बचन बखाना। त्यागो दिवसो यान निदाना ९६ तुम सो हस्त धारि निज लीन्हा। मम पौरुष को पूरण कीन्हा॥ सुनत कृष्ण क्रोधातुर आसू। मारत भये गदा शिर तासू ९७ मारो उरपद यदुकुल दीपा। गिरो भिन्न उर कृष्ण समीपा॥ सो उठि बहुरि चढ़ो रथ जाई। हरि ऊपर बाणन झरि लाई ९८ कहोकृष्ण अर्जुन सुनि लीजै। हम तुममिलि यासों रण कीजै॥ जनि अर्जुन शंका उर धारिय। भागत पृतना सकल निहारिय ९९ जिते बभ्रुवाहादिकजेही। लै गांडीव हतिय रण तेही॥ हमहूँशारँग धनुष

सँभारें । दोऊ मिलि याको संहारें १०० यह कहि कृष्ण हतन शर लागे । अर्जुनहूँ क्रोधातुर त्यागे ॥ देखत कह्यो भूप सुत बैना । सुनिये कृष्ण सकल गुण ऐना १०१ तजि सूतत्व धरो रथि वेषा । यत्न विरचि चह जीत विशेषा ॥ होइ सारथी लेहु बचाई । नाहिंत अर्जुन जाइ नशाई १०२ सुनि रथतजो कृष्ण सुखपाई । अर्जुनकेसारथिभेजाई ॥ हांकतभये तुरँगतिहिकाला । कशाघात क्रोधातुर चाला १०३ सरुट सुचित्र कठिन शर लयऊ । दशइषु हनत कृष्ण के भयऊ ॥ षष्टिबाण अर्जुन तन मारे । छत्रकाटि अर्जुन कर डारे १०४ शत शर बहुरि कृष्ण के मारे । अर्जुन तासु खण्डि रथ डारे ॥ बाणन सों विभेद पुनि गाता । चहूँओर छाये शर व्राता १०५ पदचर धायो अर्जुन पाहीं । पद परहार हतो हरि ताहीं ॥ पाद घात धरणी तल आयो । पुनि उठि चढ़ि गजमत्त सिधायो १०६ शरभ्फरिकृष्णार्जुन पर लायो । बाणनइति रथस्थ भरमायो ॥ मूर्च्छा त्यागि भिरेभट जेऊ । भे नृप सुत शर मुर्च्छित तेऊ १०७ याविधि युद्ध देखि विकराला । लिय हरि चक्र सुदर्शन हाला ॥ रथसों उतरि क्रोधकरि धाये । तिष्ठतिष्ठ कहि वचन सुनाये १०८ पृथ्वीकांपि उठी तिहि बारा । देवन उर भय भयो अपारा ॥ कंपे सूर्यक्षोभ वारीशा । भोदिग्दाह सभय फणि ईशा १०९ देखत ताम्रध्वज गज त्यागा । सन्मुख कृष्ण गयो बड़भागा ॥ तब लगि कृष्ण क्रोध उर भारी । शतअक्षौहिणि सेनसँहारी ११० देखि सुचित्र पतित निज सैना । हर्षित कहो कृष्ण सों बैना ॥ सेना मारि कियो निज काजा । अंतर दायिनि मध्य समाजा १११ क्रोध कराल चक्रकर धारा । या विधि देखिय रूप तुम्हारा ॥ लखि कराल वपु भांगहिं नाहीं । तिष्ठमान होइय रणमाहीं ११२ हय रत्नत इमि परे लखाई । ढूँढ़तकांच यथा मणि पाई ॥ पार्थहि प्रथम पुण्य निज दीन्हा । अब चाहत अर्पण तन कीन्हा ११३ गहौ हाथ निज चक्र कराला । बहुरिगहौं अर्जुन को हाला ॥

यह कहि झपटि चक्र गहि लीन्हा । दच्छिण करसों देर न
कीन्हा ११४ बायें हाथ चरण गहि लयऊ । निज ललाट महँ
थापित कयऊ ॥ सो बहोरि अर्जुन पर धायो । हरि पारथ निज
काह बचायो ११५ पुनि अर्जुन हरि आयसु जाना । अंग सु-
चित्र हने शत बाना ॥ पद परहार तबहिं सो कीन्हा । हरि
पार्थहि बहोरि गहि लीन्हा ११६ तबहिं कृष्णफेंको तिहिहाला ।
धरणी जाइ परो ततकाला ॥ पाइ क्रोध ताम्रध्वज धायो । कृ-
ष्णार्जुन कहँ भूमि गिरायो ११७ नरनारायण मुर्छितभयऊ ।
तबलगि दोउ अश्व पुर गयऊ ॥ हतावशेष सुभट लै साथा ।
निजपुर जात भयो नरनाथा ११८ पुरबाहर मख मण्डल साजा ।
तहां मयूरध्वज हैं राजा ॥ मिलत भये ताम्रध्वज जाई । पुत्रहि
लखि नृप कह सुख पाई ११९ बीते बर्ष अश्व पुनि आवा ।
द्वितिय अश्व क्षाको छबि छावा ॥ हाथ जोरि कह बचन सने-
हा । धर्मराजकर मखहयएहा १२० संगकृष्ण अर्जुन बलवाना ।
यज्ञ बाजि रच्छत विधि नाना ॥ अपर सुभट बहु साथ विशेखा ।
पुरीबभ्रुबाहन इमिदेखा १२१ निजहय रच्छत अश्वललामा । गहो
तहाँ अतिभो संग्रामा ॥ निज प्रधान बहुलध्वज जोई । तिनसों
लेहु पूछि सबसोई १२२ सुनि इमि नृपति पुत्र मुखबैना । मंत्री
सों पूछो गुणऐना ॥ कहबहुलध्वज सुनहु नरेशा । प्रद्युम्नादि
महाबरबेशा १२३ तिनहिं पुत्र तव मुर्छित कयऊ । लरतकृष्ण
अर्जुन सों भयऊ ॥ तिनसों महा युद्ध सो करिकै । पकरतभयो
मोद उरभरिकै १२४ भेद्यौ मुर्छित भूमि गिरायो । अश्वनके
पीछे इतआयो ॥ मुर्छातजि पारथ यदुराई । का अब करहिं न
जानतराई १२५ यंबिधि बचन सुनत कहराजा । आयो सुतकरि
महा अकाजा ॥ लैहय दोऊ अत्रासिधायो । कृष्णार्जुनहि संग
नहिंलायो १२६ तजि कृष्णार्जुन लैहयदोई । मेरो यज्ञ पूर्णनहिं
होई ॥ शत्रुरूप यहपुत्र हमारा । घरमें बाधाकियो अपारा १२७
जोतैं हरि अर्जुन कहँदेखा । लायो क्योंनहिं अत्र विशेखा ॥

जिमि दुर्भगा नारिपतिपाई। सोवै संध्याही अलसाई १२८ जिमि तुलसी कानन तजिकोई। बिजया बन सेवन चितहोई॥ चंपक माला मोहित छण्डै। कुसुम धतूरमालहियमण्डै १२९ तैसे तैंहरि अर्जुन त्यागा। ममगृह तजि जादूर अभागा॥ अश्वन खेदि दूर मैं देहौं। हरिसमीप तजिकै मखजैहौं १३० हे दुर्बुद्धि ठाम बतलाइय। जहँ हरिविष्णु तहाँ हम जाइय॥ याबिधि हरि कांची नरनाहा। निन्दतभये पुत्र निजकाहा १३१ उतकृष्णार्जुन मणिपुर जागे। मूर्च्छा अपर सुभट सबत्यागे॥ तब बोले अर्जुन हरिपाहीं। कहांगयो नृप हयन लखाहीं १३२ तहँलै चलिय करहिं संग्रामा। सुनत बचन बोले सुखधामा॥ दोऊ अश्व रत्नपुर गयऊ। जात नृपति तिनपीछे भयऊ १३३ हमहूं सब चलिहैं पुरतेही। बसत मयूरध्वज नृपजेही॥ हम तुम आगे चलहिं सिधाई। पीछेते आवै कटकाई १३४ आगे चलिकै देहिं दिखाई। साहस सुभग शिखिध्वजराई॥ हस्तपकरि अर्जुनहरि गयऊ। पीछे गमन कटक पुनिकयऊ १३५ पारथ सों बोले यदुराई। लखहु नगर दीक्षित नरराई॥ तोरण रम्यदिब्य पुरशोभा। देखत कस्य चित्त नहिं लोभा १३६ दो०। वृद्धबिप्र ब पुनिज करहिं तुमको बालबनाइ। चलहिं मयूरध्वज निकट तबकारजहितलाइ १३७ आवहु प्रविशहिं पुरमहत निशामध्य इहिकाल। जननगुप्त बिचरहिं निशा देखहिं शोभ बिशाल १३८ सकल निशाबिचरेपुरी सुनत बचन नरनारि। बहुरि निकट भूपतिगये होतहि उदयतमारि १३९ चौ०। सिंहासनपर भूपबिराजैं। देश देश भूपति छबिछाजैं॥ बिप्रवृन्द शोभित बहुतहँवां। सौम्रिकपूर गंध बहुजहँवां १४० नानारत्न जहां उजियारी। दीक्षित नृप शोभित सहनारी॥ स्वस्ति बचन द्विजप्रथम बखाना। होवै तब भूपति कल्याना १४१ आये लखहु बिप्र हमआहीं। शिष्य सहित मण्डप मखमाहीं॥ उठि सशिष्यकिय नृपति प्रणामा। बोले बचन बहुरि गुणधामा १४२ बोले स्वस्ति प्रणाम बिनाहीं।

शापसमान भयो हमकाहीं ॥ परे दण्डवत भूपति आई। कृष्ण उठाइ लीन्ह सुखपाई १४३ तबहिं नृपति अति बचन अमोले। हरिश्चन्द्र विप्रसों बोले॥ पूज्यपाद किहि कारणआये। शिष्य सहित अति तेज सुहाये १४४ कौनकरिय प्रिय कार्य तुम्हारे। नहिं अदेय कछु अहै हमारे॥ आप कृपा हमभे धनिआजू। आज्ञादेहु करहुँ द्विजराजू १४५ कहो विप्र सुनिये नरराई। जिहि कारण आये इतधाई॥ रम्य धर्मपुर सों हम आये। सुवन विवाह हेत सुखपाये १४६ तवपणि अत्रसकन्याजोई। तनुजा देइ शील युतसोई॥ जबलगि मिलो न नगर तुम्हारा। तबलगि मारग सिंह निहारा १४७ क्रोध सहित ममसुत गहिलीन्हा। बचनहेतउद्यमबहुकीन्हा॥ मोहिंदुखितलखिकेहरि बोला। सुतभयदावच मनुज अमोला १४८ तीक्ष्णदंष्ट्र पुच्छ विकराला। भय दिखरायो मोहिं विशाला॥ करत वृथाश्रम निज सुत हेता। कालहुगहि कतहूं तजिदेता १४९ सहित शिष्य जाइय निजबासा। हिंस्त्रनआगे नाहिं सुपासा॥ जनिये और पुत्र अब जाई। जो परलोक होइ सुखदाई १५० जेअपुत्र पूरुष जगमाहीं। हैं परलोक लहलते नाहीं॥ तब मैं कहो मोहिं भषिलीजै। बालक छांड़ि कृपा करिदीजै १५१ छन्दबरवा। अल्पायुष मम खाइय वृद्धालीन। व्यर्थ अहै मम जीवन पुत्र विहीन॥ कहो सिंह सुनिबानी सुनिये विप्र। मृत्युग्रस्त हममारत पाइ सुक्षिप्र १५२ मृत्युसहायक सबहैं सर्प जलादि। ताते भूसुर कीजिय निज श्रमवादि॥ बहुआयुषहैरावरि पुत्रकिथोरि। ताते जाइय मानिय आयसु मोरि १५३ कहो सिंहसों तब मैं बचन सुनाइ। बचनहेत याके कछु कहौं उपाइ॥ दान तपस्या आदिक औरौजौन। सुनिय नृपति जो केशरि भाषोतौन१५४ माँगतभो कछु तुमसों सिंह कराल। सोनबनतहै भषित हमसों हाल॥ कहो नृपति है माँगो केहरिजोइ। कहिय विप्रवर मोसों देहौंसोइ १५५ कहो विप्रहै माँगो मृगपति जौन। अति दारुण

नृपबाणी सुनिये तौन ॥ कहोभूपकी लावहु आधीदेह। छाँड़ि देहुँ तव बालक जिहि अतिनेह १५६ तपसादग्ध तुम्हारी देहन चाह। पुष्ट दुग्ध रस आदि नवपुनरनाह ॥ लाइय नृपतनु जाइय शीघ्रगतत्र। तबलगि मैं नहिं मारौं तव सुत अत्र १५७ कह हरिसों मैं सुन्दर नृपतनु जौन। भैंनजाहुँ परहित देवै किमि तौन ॥ कहो सिंह द्विज जाइय भूपति पाहँ। अवशि विप्रहित देहैं तनुनरनाहँ १५८ जिमिदधीचि निजदीन्हे अस्थि निकारि। दीन्हरविज निज कवचहि अति सुख कारि ॥ देहिं मयूरध्वज तिक्षितनु युत नेह। यशस्वीन नहिं होवै अति प्रिय देह १५९ बाहुजरण वपुत्यागें वाहित विप्र। हीन पुत्र हे भूसुर जाइय क्षिप्र ॥ राज्य बहुत दिन कीन्हीं जन्मेपुत्र। कृपा करहिंगे तुमपर संशय कुत्र १६० दो०। अर्थीमाँगत सकलहैं जन देवैके नाहिं। ताते जाइय विप्रवर शीघ्र नृपति के पाहिं १६१ या विधि पठयो सिंह इत बचन कहे बहुतत्र। सुतशोकातुर शिष्य युत मैं आयों चलि अत्र १६२ पूर्व विप्र सुत लाइयो रामचन्द्र बरबीर। पुत्रार्थी आयो निकट रामतुल्य गुणिधीर १६३ चौ०। भूपति कहो बैठिये विप्रा। देहौंतनु मण्डप निजक्षिप्रा ॥ यहकहि सुतहि राज्य नृपदीन्हा। जाह्नवितोय सुमज्जन कीन्हा १६४ तुलसीदल माला हँसि-धारा। शंखचक्र अंकितबपुकारा ॥ सभामध्य सबद्विजनसुनायो। श्री हरि विप्र रूप धरिआयो १६५ पुत्रार्थी लखि पूजन करिहौं। अर्द्ध शरीर देइ मुदभरिहौं ॥ लखहु विप्र सब कौतुक अत्रा। वार्द्धकीक लावहिं करपत्रा १६६ द्वैखंभारोपहिं इत आई। फोरहिं मम मस्तक हरषाई ॥ हमकहँ प्रिय जानत जनजोई। कहु-चमापन दूषण सोई १६७ विप्र प्रधानादिक सुनिएहा। कंपित भययुत भये सनेहा॥ करुणासहित कहत सब तत्रा। कालरूप आयो द्विज अत्रा १६८, निर्दय प्राण हरण नृपकेरे। याचक हम देखे बहुतेरे ॥ परऐसो कबहूंनहिं देखा। यह निर्दय निरपत्रप लेखा १६९ घातक सिंह मांस आहारी। नहिंमानुष इहि

भांति निहारी ॥ ब्राह्मण जाति ज्ञान को लयऊ। स्वार्थनिष्ठ कैसे यह भयऊ १७० कौन उपाय करहिं अबभाई।कछू न हम को परत लखाई ॥ सत्यबादि आतिथ प्रिय जिनको। करहिं निवारण काबिधि तिनको १७१ काब्राह्मण बपुहरितो नाहीं। जिमि बामन बलिके मख माहीं ॥ याबिधि कहत सकल जन भयऊ। राजा सबहिं निवारण कयऊ १७२ हर्षितनृपतिबंहुरि तिहिबारा। दीन्हेंदान अनेक प्रकारा ॥ बार्द्धकीक तिहि अवसर आये। द्वै खंभा तहँ सुभग बनाये १७३ तिर्य्यक् काष्ठ कियो तहँ एका। रज्जु बद्ध दृढ़ किय सबिबेका ॥ राजा कहो लेहु करपत्रा। मम मस्तक धारहु लै अत्रा १७४ हर्षित नृपति बिप्र पद धोये। बहुरिबचन बोले सुख मोये ॥ अर्द्ध शरीर देत हमदाना। होइँ प्रसन्न यज्ञ भगवाना १७५ चाहत शुभ अपने कुल केरा। यौबन धनहिदेत इहिबेरा ॥ अर्द्धगात्र लीजै ममबिप्रा। होइप्रसन्न सिंह जिहि क्षिप्रा १७६ आजु धन्य भूतल मैं भयऊ। मोकहँधन्य बिप्रबर कयऊ ॥ सादर सुनहु लोग ममबैना। तनधन जासु हेत पर हैना १७७ शोचनीय सोहै जगमाहीं। ताते हर्ष करिय हम पाहीं ॥ याबिधि सुनि मुख बचन कृपाला। हाहाकार भयो तिहि काला १७८ नृपहि बिलोकि राष्ट्र सब कैसे। क्रन्दमान कुररी गण जैसे ॥ तब महीप महिषी तहँआई। याबिधि कहतभई समुझाई १७९ अति हर्षित सब बिप्रनआगे। बैनकुमुद्वति कह सुखपागे ॥ हेनृपसुना बिप्रहितआजू। अर्द्धदेह देहुँ महराजू १८० दो०। सत्यबागभव देइमम मैंतवार्द्ध तनुनारि। जीवत दीजिय दानप्रभु भिन्नगतासु बिचारि १८१ लेइ नहीं पर भिन्नहरि मम मन आवतएह। चतुर्थांश जोदेहु नृप बृथा नशैतवदेह १८२ मांगी आधीदेहहरि नारिरूपसो जान्न। प्राणतजै पतिअग्रतिय धन्य न तासु समान १८३ उत्तम गतिसो पावई अत्रबिचारन और। याबिधि रानी बैनसुनि कहे बिप्र शिरमौर १८४ मन एकाग्र बिलोकिकै कहो सुनिय नृपअत्र। बामअंगनारी अहै

भाषो के हरितत्र १८५ दक्षिणांग नृप दीजिये बामलेइ नहिं सोइ। जो नहिं दीजिय अंगनिज जाहिं आश बिनहोइ १८६ सोइ पठायो आपुढिग जाइकहौंगो तत्र। सुखसमेत भक्षणकरिय मेरे सुतकोअत्र१८७याबिधि भाषत बिप्रवर सुनत सभासद ताहँ। तिहि अवसर कौतुकनिरखि आयो सुतनरनाहँ १८८तिहि ब्राह्मणहि सशिष्य सों कोमल गिराउचार। संपादत पितुके यशहि आनन्दित सुखसार १८९ पुत्र पिताही समश्रहै भाषत वेदबखानि। पितुमम दीन्हो अर्द्धवपु ब्राह्मणको हितजानि १९० पितुको अर्द्धशरीरहै पुत्र समग्र शरीर॥ मांस पुष्टमोकहँनिरखि हो प्रसन्न हरिधीर १९१ होइ महद्यश पुत्रको सुनिय बिप्रवर बैन। भीष्मराम आदिककिये पिताबाक्ययशऐन १९२ सुनितामध्वज के बचन कहो बिप्रवर तत्र। जाबिधि भाषो सिंहमम सुनिय पुत्रसो अत्र १९३ मुण्ड मयूरध्वज नृपति पुत्र नारि कर भिन्न॥ द्विधा जात तनु लाइये दक्षिणांगमति पिन्न १९४ करैं अन्यथा कौनबिधि तिहि अवसर नृपतत्र। बारण कीन्हो तिय सुतहि देतभये करपत्र १९५ अति हर्षित भूपतिभये। जपत रामकेनाम॥ बांसवादिसुरलखत हैं बिप्रतेजके धाम १९६ जबहि धरो कर पत्रलै निजमस्तक महिपाल॥ ग्लानि महातम न उरभई पौर दुखित तिहि काल १९७ भूप बचन गहि पुत्र तिय गहतभये करपत्र॥ राम राम कहि रानितब कहो बिप्र सोतत्र १९८ सुनहु बिप्रहम भेदहीं निजपति को इहिभांति॥ जिमिनृसिंह तनुधारि कै खंभहि दैत्याराति१९९ कियोबिदारण दैत्यपति तिमिनाथहि इहिकाल। तिहि अवसर निजरानिसों कहतभयेमहिपाल २०० तवकरस्थकरपत्रयह सुखद प्रिये इमि मान। कोमलकेतकिपत्र जिमि सुखद शरीरबखान २०१ मम शिरभेदिय शंकतजि संगमकर जसमानै॥ यथानपीड़ातत्रमम तिमि इहिदंतन मान २०२ कोमल कमल समानये रदकर पत्र लखात। शिरबिभेद करपत्रसों तबरानी सहतात २०३ चौ०।

भयो भिन्नमस्तक महिपाला। हाहाकार मची तिहिकाला॥ वाम चक्षुमहँआयोबारी। भूपतिसोंकहबिप्रनिहारी २०४ लेबनरोइदेत जोगाता। दानभावबिन लेतनज्ञाता॥ रुद्रस्वर्ग ममपुत्रबिहीना। होवै होइन संशयपीना २०५ इच्छासहित सिंहअबजावै। लै बालक मम आनँद पावै॥ रोइ शरीर देत महिपाला। हम किमि लेवैं बिप्र बिशाला २०६ यहकहि भूपहि त्यागि मुरारी। अर्जुन सहित गये तिहिबारी॥ ब्राह्मण जातबीक्ष्य तिहिकाला। कुमुद्वती नृप शिरगहि हाला २०७ मस्तक भिन्नगहो दुहुँहाथा। सुमुखी कहे बचन नरनाथा॥ महाबुद्धि सत्यब्रत स्वामी। सकल वदात्य शिरोमणि नामी २०८ ममकर भिन्न तुमहिं तजिक्षिप्रा। बारयनाहिंत जात सुबिप्रा॥ होवै कीरति बिफल तुम्हारी। जो ब्राह्मण जावै इहिबारी २०९ भद्रे भिन्न शीश धृत पानी। ताते कहत बिप्रसोंबानी॥ मुनिमागच्छ सुनिय ममबैना। तापीछे जाइय गुणऐना २१० जाते तोय बामचषआयो। दक्षिणांग मुनि हित सुखछायो॥ पतित भूमि बामांग बिशेखी। बृथा जात रोवत यहलेखी २११ दो०। तीक्ष्ण दंत करपत्र मम तादृश ब्यथानहोइ। बिंप्र बिमुख बामांगसो यादृश ब्राह्मण सोइ २१२ चौ०। भूपति बचन सुनत इहिभांती। भये प्रसन्न असुर आराती॥ आपन रूप नृपहि दरशाई। समालिंग्य बोले यदुराई २१३ धन्य मयूरध्वज महिपाला। दीन्ह परीक्षा कठिन कराला॥ कीजिय यज्ञसपुत्रसनारी। कर्त्ताकर्महोव इहिबारी २१४ अर्जुन हमतोषित संग्रामा। तव सुतेन ताम्रध्वज नामा॥ मुर्च्छित कीन्ह सैन्य युत एहा। अतिप्रसन्न हम नहिं सन्देहा २१५ देखि हमहिं किमि दुखलह प्रानी। तुम दिय अर्द्धदेह मम बानी॥ तवसुत जीतत भोरणमाहीं। लीजै अश्व युधिष्ठिर काहीं २१६ दो०। जातें भक्ताधीन हम अश्व हवनकरि दोइ। शोभन कीरति लीजिये उभय लोक यशहोइ २१७ मेरे देखत किमि भयो रावर भिन्न शरीर। याबिधि सुनि श्रीहरि

बचन बोलत भे नृपधीर २१८ परमधाम तव बिष्णु जो बाह्य स्थित सुखरूप। मम शरीर को भिन्नकरि कीन्ह प्रवेश अनूप २१९ आजुधन्यमोकहँ कियो बासुदेव भगवान। यज्ञ किये का होइगो जबप्रसन्न सुखदान २२० जगन्नाथ तव दरशकरि अमित पुण्य श्रुति बैन। कोटि यज्ञकृत पुण्य हो यामें संशय हैन २२१ कर्म करन हित जो कहो आपुकीजिये सोइ। दोउ अश्व मम पुत्रमम प्रीय महाजन जोइ २२२ कारकमख अरु यज्ञहित सामग्रीहै जोइ। सब लै अपने हाथसों धरियहृदय निजसोइ २२३ तुमहिं पाइ जो मख करौं हँसहिं बिप्रवर जौन। गंगाजलको त्यागिकै गह नीहारहिं कौन २२४ महत अग्निको छोड़िकै बिष्फुलिङ्ग हिमयुक्त। कहिय जनार्दन कौनअस जो होवैअनुरक्त २२५ मूरुख दोहयपाइकै तुमहिं त्यागि सुखसार। हयमेधन सो पूजई सोतन लह यममार २२६ मृमसुत आवत भो इतै रणतजिशोभासाज। भाग्योदय सों मैंलखों नरनारायण आज २२७ छन्दशिखरणी। नमस्ते कंसारी मनुज बपुधारी यदुपते। जगद्धंत्रे गोप्त्रे सकल जगकर्त्रेजगपते॥ नमस्तुभ्यं पूर्णं जगत गुरवे पद्मनयनं। अपारंशान्ताङ्गं कलित बपुषं ज्ञान अयनं २२८ छन्दमनहरण। श्वास सो करण वेदहरणजगत खेद दरण शरण भेद असत जोगायोहै। निजजन भरण धरण निजभक्ति उर मरण जनम सोहँ होतही नशायोहै॥ कालहूके कालचख कमल रसाल भुज युगल बिशाल जनत्रवश बसायो है॥ मुखचन्द्र सों प्रकाश मनहर शुभहास जनउर करवास ममछबि दरशायो २२९ छन्दशुभगीत। लहत जाको पारवेदन भेद और कि पावई। व्यास शुक सनकादि शंकर जासुकीरतिगावई॥ शेष सुमिरण करत नारद शारदा धुनि तानसो। नई कीरति होत दिन दिन कहत शास्त्र पुरानसो २३० दो०। याबिधि नृपअस्तुति सुनत श्रीहरि आनँद पाइ। तीनदिवस तहँरहतभे निजजन आनँददाइ २३१ नृपति मयूरध्वज कथा

याविधि बरणी एह । जियालाल दुखहारिणी दायक श्रीपति गेह २३२ ॥

चौ० । कथा भवनबरणौं सुखपाये। राजपूत चौहानकहाये॥ नौकर राना की सरकारा। रूपकदोलख मास गुजारा॥ भगवत भक्त दया की मूरति। हरिजनसेवक हरिपद सूरति २३३ गये अखेट एकदिन राना। भवनसाथ गे आयसु माना॥ मृगी एक भागी लखिपाये। अश्व तासु पीछे दौराये २३४ जाइ समीप खड्ग तबमारा। काटिखण्ड युग भूपरडारा॥ गर्भवती ताको लखि पाये। अमित गलानि हिये निज लाये २३५ हमऊपरहरि भक्त कहाई। अंतर कपटी मलिन सदाई॥ दीन्हो त्यागि खड्ग वहभारी। दारु खड्ग इक लीन्ह सवाँरी २३६ राना सभा नित्य ले जावैं। लोह मूठिऊपर चमकावैं॥ हीसेदार एक दिन कोई। राना सों बरणो सबसोई २३७ रानाके मनमें नहिं आयो। हेत परीक्षा बर्ष बितायो॥ पीछे परो बहुत वह जबहीं। राना किय बिचार यह तबहीं २३८ सभामध्य बैठेइकबारा। देखन हित निज खड्ग निकारा॥ वारीसोसब के लखिलीन्हे। बहुरिभवन को आयसु दीन्हे २३९ खड्गआपनहु आप दिखावैं। सुनत भवन इमि बचन सुनावैं॥ कीबे सोइ करौनरनाहा। दारुखड्ग मम कहिबे चाहा २४० हरिइच्छा भाणीयहबोले। सारुखड्ग ममकौशति खोले॥ जो खैंची तलवार सुहाई। विद्युच्छटा सहस जनु आई २४१ क्रोध कियो राना लखि तबहीं। काटौ शीश चुगल कर अबहीं॥ बोले भवन तबहिं कर जोरी। राना सुनहु बिनय यह मोरी २४२ याको कछू दोषनहिं होई। खड्ग अवश्य काष्ठ की सोई॥ हरिकृपा भई यह ऐसी। रही प्रथम वरणी उन जैसी २४३ सुनि राना अचरज मन आनो। धन्य धन्य करि भक्त बखानो॥ कछुक भूमि दीन्ही तिनकाहीं। कहोरहौ घरहीं निज माहीं २४४ दर्शन देन हमहिं नित ऐये। चाकर मोरन आप कहैये॥ जियालाल प्रभुजन सुख कारी। सदा भक्त की बिपति

निवारी २४५ दारु खड्ग कीन्हीं अति चोखी। सदा भक्तपर कृपा अनोखी॥ जो हरिचरण शरण गहि लेई। ताहि त्रिलोक कौन दुख देई २४६॥

रांका की कथा॥

चौ०॥ कथा भक्त रांका की गावैं। जासु कृपा हरिपदरति पावैं॥ रांका कुंभ कारकुलजाये। भगवतभक्ति मोदउरछाये २४७ जो कछु द्रव्य कमाई पावैं। भगवत भक्तन काहँ खवावैं॥ हरिकी कथा सुनैं अरु गावैं। हरि सुमिरण तजि औरनभावैं २४८ एक समय बहु पात्र बनाये। निशा समय आवांबिच लाये॥ एक पात्र मार्जारिं बियानी। रांका यह वृत्तान्त न जानी २४९ आवां बरनलाग वह जबहीं। जानो हालतासु तिनतबहीं॥ भयो शोच तिनके उरभारी। त्राहित्राहि हरि बचन पुकारी २५० दो०। जहँ जहँ दासनदुखपरो तहँ तहँ रछाकीन। मार्जारी सुतराखिये जानि मोहिं अति दीन २५१ छन्दमाधवी। जब हाटक कश्यप दीन दुखै प्रहराद जनैनहिं देरकरी। प्रगटे झट खंभ बिदारि सभामहँ रूपकराल मनुष्य हरी॥ पुनि आशरमारि भगाइ निशाचर राजि दई प्रहराद जनै। यशगावत ब्रह्म सुरेंद्र सबैचल अग्नि धनेश जलेशभनै २५२ चौ०। लाक्षागढ़ पाण्डवनबचाये। दुर्वासा को मान लचाये॥ चल सुतसो अर्जुनहि उबारा। ब्रजजनहित गोबर्द्धन धारा २५३ द्रुपद सुताकी राखी लाजा। दावापान कियो यदुराजा॥ बालि त्रास सुग्रीव बचायो। जल बूड़न गजराज न पायो २५४ मेरीटेर सुनौ अब स्वामी। बार अनेक नमामि नमामी॥ मार्जारी शिशुलेहु उबारी। जाउँ नाथ चरणनबलिहारी २५५ अस्तुति करी बार बहुनाना। तबलगि आवांसुलुगिसिराना॥ आवां वह खोलतभे जबहीं। मार्जारी शिशु देखे तबहीं २५६ आवां पात्रपकेसब जोई। शिशुजामें पाको नहिं

सोई ॥ देखत शिशुपायो सुख भारी । गृह दरिद्र आवै निधि भारी २५७ दो० । याविधि रांकाकीकथा जियालाल कहसोइ । सुनै जौन जनचरित यह दयाहियेमधि होइ २५८ ॥

चौ० । केवलरामकथासुखकारी । वरणौंश्रीहरिपगउरधारी ॥ भगवत भक्ति प्रवर्त्तक भयऊ । बिमुख लगाइ चरणहरि दयऊ २५९ दुख सुखशत्रु मित्र नहिं जानैं । समदरशी घटघट हरि मानैं ॥ विमुख जानि हरि ताहि सिखावैं । करि उपदेश सुमारगलावैं २६० माला मूरति देइँ बुलाई । जपौ नामहरिसेवौ भाई ॥ बिनहरिकोऊ काम न ऐहै । इतको साज इतै रहि जैहै २६१ नागा नीक करत तुमजोई । प्रगट धर्म पुरमें है सोई ॥ गुजरत हाल नित्य तहँ जाई । चित्रगुप्त सो लिखत बनाई २६२ याविधि करि उपदेश घनेरे । कोटिन अघी कीन हरि नेरे ॥ अवसर एक एक बनजारा । कोड़ा वृषभ आपने मारा २६३ केवल राम गिरे भूमाहीं । देखत रही देह सुधिनाहीं ॥ देखत लोगन दौरि उठायो । कोड़ा घात देह लखि पायो २६४ ऐसी दया जासु तनभारी । वृषभचोट उपधंन निजधारी ॥ दया मूल सब धर्मन माहीं । धारत हरिजन हिये सदाहीं २६५ ॥

चौ० । अबहरिव्यासकथाशुभगावों । भगवतभक्तिकृपाजिन पावों ॥ ऐसे निज मानस हरिचीन्हा । देवनकाहँ शिष्यकरि लीन्हा २६६ एकसमय चरथावलग्रामा । बागव्यास कीन्हो विश्रामा ॥ तहां रहै दुर्गा अस्थाना । कोऊ कीन्ह छागबलिदाना २६७ लखिहरिव्यासदया उरआई । शोचविचारकीन बहुताई ॥ भोजन तहां कीन्हकछु नाहीं । आईं दुर्गा निशातहांहीं २६८ सहै कौन हरिजन दुखभारी । आइ देवि इमि कहा पुकारी ॥ भोजन आप करौ किमि भूखे । आई लखि रावर को रूखे २६९ सुनि हरिव्यास कहा इमि बानी । होइ अनीति जहाँ हम जानी ॥ तहँ भोजन कौनी विधि कीजै । बाढ़ै पाप पुण्य तन छीजै २७० देवी कहो क्षमा अब कीजै । अब उपदेश

मंत्रकरदीजै ॥ करौ पवित्र नगर यह आपू । भगवतभक्त बड़ा परतापू २७१ सुनत व्यास हरिहिये बिचारा। देवी शिष्यहोत इहि बारा ॥ देवी शिष्य होइजो जाई। सकल नगर हरिभक्त कहाई २७२ यह विचारिकीन्हो उपदेशा। देवीनृपगृहकीन्ह प्रवेशा ॥ राजा रहै ग्रामकरजोई। तासों कहो स्वप्न में सोई २७३ गहिये शरण जाइ हरिव्यासा । नाहित करौं नगर सहनासा॥ दीन्ह उलटि पर्यंक समेता। उठो भूप निद्रागत चेता २७४ पुनि हरिव्यास शरण को आयो । सकल ग्रामहरिभक्त कहायो ॥ ऐसे संत पवित्र चरित्रा । महापातकिन करत पवित्रा २७५ ॥

चौ० । राजा शिविकी कथाबखानौं । पूरण दया जासु उर मानौं ॥ भूपति यज्ञ करत इकबारा। जहाँ विराजत विप्र अपारा २७६ हरि शिखि भूपति यश सुनिपाये। दोऊ लेन परीक्षा आये ॥ वह्निकपोतबपुषतबकयऊ । श्येनरूपत्वासव धरितयऊ २७७ भजो कपोत बाजरपटायो। भूपति यज्ञ करत तहँ आयो ॥ नृप की गोद कपोत लुकाना । घेरिबाज इमि बचन बखाना२७८ दो० । अहो भूपधर्मज्ञ तुम हमहुँ सुनी यहबात। मोह कृपणताहै नहीं नेकरावरेगात २७९ चौ० । पालतआप सबहिं भूपाला। ऊँच नीच यावत नरबाला ॥ गुणधारत अवगुणहिं दुरावत । विमुख नजात द्वारजो आवत २८० धर्म छाँड़िये भूपति नाहीं । अपयश छाइ रहै जग माहीं ॥ यह कपोत भोजन है मेरा । तैं किमिलिय छपाइ या बेरा २८१ क्षुधित अहौं नृप बहु दिन केरा। दीजै मोहिं याहि याबेरा ॥ भूपति कहो बाज सुनि लेहू। आश कपोत छोंड़ि तुम देहू २८२ सभय कपोत शरण ममआयो । त्यागौं ताहि न तुमहिंबतायो ॥ शरणागत त्यागै नर जोई। दोष ब्रह्म बध पावै सोई २८३ हित अनहित बिचारि जो त्यागै। नाशै पुण्य पाप तन जागै ॥ नाशै पुण्य तासु सुख देखै। धर्मी सुख लखि बढ़ै विशेखै २८४ ताते याहित जौं नहिं कबहूँ। कोऊ ममशिर काटै तबहूँ ॥ सुनत बाज बोला

इमि बानी । हमतौ तुमहिं सुना बड़दानी २८५ सो अब छूटत
हमहिं लखाई । अमर नहोउ जगत मधि राई ॥ दिये अहारहोइ
बड़ काजा । लीजै मानि शीष ममराजा २८६ बिना अहार
रहै नहिं प्राना । त्यागि कलेवर करै पयाना ॥ मेरेमरे बहुत
तजिआशा । जननि जनक सुत नारि बिनाशा २८७ एक
जीव की रच्छा करिहौ । हत्या शीश बहुत की धरिहौ ॥ बिना
बिवेक करै जो कोई । पछितावा पीछे ते होई २८८ क्षीन
धर्म कर मारग सोई । पुण्यहु करत पाप कहुँ होई ॥ ताते नृप
मानौ ममबानी । देहु अहार मोर यहजानी २८९ दो० । शरणा-
गत रच्छा करहिं कह शिवि सुनहु. शचान । हिये बिचारो
आपने यासम धर्म न आन २९० पण्डित सोई धर्म पर
सत्यवादि मतिधीर । सोई ज्ञानी शीलयुत हरै पराईपीर २९१
चौ० इच्छास्वर्गकरौंमैंनाहीं । नहिंबैकुण्ठबास मनमाहीं ॥ भुक्ति
मुक्ति चाहत हमनाहीं । नरक जान भयनहीं कदाहीं २९२ है
अभिलाष सदा मनएही । आवै शरण तजौंनहिं तेही ॥ जो
मोपर प्रसन्न भगवाना । यहबर मांगौं चाह न आना २९३ तन
धन धाम बाम सुतजावै । तजौं न ताहिं शरण जो आवै ॥
यहकपोत मोकहँ प्रियलागा । कौनीभांति जाइ सोत्यागा २९४
मांगौ और कछू मनआनी । सुनिशचान बोला तबबानी ॥
भूमि धाम धन चाहतनाहीं । उपधन चाह न है मनमाहीं २९५
भोजन रहै कपोत हमारा । सो न दीजिये सुनिय बिचारा ॥
पललापनो खवावोमोहीं । जानौं दयावन्त तबतोहीं २९६ दो० ।
धरौ कपोतहि एकदिशि तुला मांझ मतिधीर । तासम धरिये
मांसनिज हरौ क्षुधाकृतपीर २९७ छन्दतोटक । सुनि हर्षित भे
शिविराउतबै । धनि देहलगी परहेत जबै ॥ रुजशोक जरायुत
देह सदा । धिक काज परावन साधकदा २९८ चौ० । सुनिश-
चान इमि बचन उचारा । दीजिय मांसैन करिय बिचारा ॥ प्राण
जातहै क्षुधिन हमारा । बृथा बाद अबकरत भुवारा २९९ भूपति

सुनत तुला मँगवायो। पलरा इक कपोत बैठायो ॥ दूजे ओर
मांस निज धारा। पलरा निज कपोत गुरुकारा ३०० बहुरि
काटि नृपमांस चढ़ायो। पलरा नहिं कपोत समआयो॥ काटि
काटि जांगल नृपधारा। उठो न भूते नेकु निहारा ३०१ राजा
आपु चढ़ोहरषाई। देखत शिखि हरिरहे लजाई॥ चढ़े बिमान
लखैं सुरएहा। कहैं भूपदीन्ही निजदेहा ३०२ धन्यधन्य जैजै
नृपगावैं। बर्षि पुष्प निज निज पुरजावैं ॥ हुतभुक इन्द्रकपट
निजत्यागे। प्रगटे रूप भूपकेआगे ३०३ हैप्रसन्न बोले तबबानी।
धन्यधन्य भूपति हमजानी ॥ तुमसम जगत मांझ नृपनाहीं।
प्रणकिय यशहोइहि जगमाहीं ३०४ सन्तमही द्रुम जलघनजोई।
प्रगटे परमारथ हितसोई॥ संतन में नृप आपु सरीखे॥ ऐसे भूप
नयन नहिं दीखे ३०५ बृद्धावस्थाजाइ तुम्हारी। होइ नवीन
अंग सुखकारी॥ हमशठ नेक दयानहिं कीन्हा। मतलब बिना
तुमहिं दुखदीन्हा ३०६ क्षमाकरहु अपराध हमारें। यहकहि हरि
शिखि स्वर्ग सिधारे॥ पूरण यज्ञभई या भांती। भूपति हर्षकहो
नहिं जाती ३०७ या बिधि शिविनृपकथा सुहाई। जियालाल
बरणी सुखपाई॥ जो यह कथा सुनै अरुगावै। यमकिंकर ता
निकट न आवै ३०८॥

इतिश्रीभगवद्भक्ताऽनुरागदायकजियालालजन्माग्रेणबिरचितचतुर्बिंशतिनिष्ठामध्येदशमदयाअहिंसानिष्ठायांषद्भक्तकथाबर्णनोनामभक्ताम्बुनिधौद्वादशस्तरङ्गः१२॥

दो० निष्ठाब्रत एकादशौ कथाभक्त द्वै केरि। कुलिशामृत रेखा
सुभगनौमिचरण हरिकेरि१ बरणौं नरहरि चरणभजिधारिभयंकर
देह। कियरक्षाप्रह्लादकी दीन्होंराजिसनेह २ भयेदेश मुलतान
में हाटककश्यप तार। देवनके दुखटारिकै हरो भूमि को भार ३
भगवत प्रापति के हितै ब्रत समर्थकहवेद। एकादशिजन्माष्टमी
रामनवमि हरखेद ४ जोबिधि माहातम कहौं होइ अमित बिस्तार।
न्यारे न्यारे ग्रंथहैं माहातम सुखसार ५ निर्णयं के बहुग्रंथ हैं ता-

हूको नहिंकाम। मैं केवल वर्णन चहत श्रीहरियश अभिराम ६
चौ०। अम्बरीष की कथासुहाई। वरणौं बन्दि चरण रघुराई॥
भयेचक्रवर्त्तीसो राजा। भगवतभक्त महासुखसाजा ७ जिनगु-
ण दान यज्ञ यशभारी। बरणोंमुनि पुराण बिस्तारी॥ इन्द्रादिक
दुर्लभ सुखजोई। पायो अम्बरीष नृपसोई ८ परकबहूं नहिंचित्त
लगायो। भगवत सुयश अहर्निश गायो॥ भगवतकी किंकर-
ताजेती। निजकरकरैं भूपसब तेती ९ काहुसेवकहि करन न दे-
ता। एकादशी करैं ब्रतहेता॥ नवमीसो साधैं नृपनेमा। दशमी
काहँकरैं पुनिप्रेमा १० एकादशी करैं ब्रतनीके। करैं जागरण
भावत जीके॥ तिथिद्वादशी जानि नृपतेई। बिप्रन द्रव्याम्बर
धनदेई ११ बहुरिकरैं कोटिन गोदाना। बिप्रबुलाय करैं सनमा-
ना॥ भोजन व्यंजन बिबिध करावैं। तापीछे पारण मनलावैं
१२ एकसमय दुर्वासाआये। करिप्रणाम भूपति बैठाये॥ किय
सत्कार बहुतबिधि राजा। कहोअशन कीजैमहराजा १३ कह
दुर्वासा नृपति सुनिलीजै। मज्जन करि भोजन हमकीजै॥ यह
कहिगये करन अस्नाना। दण्ड द्वादशी नृपक्षैजाना १४ पारण
हित चिन्ता मनकयऊ। विप्रनसों पुनिपूँछन लयऊ॥ विप्राज्ञा
चरणामृतपायो। करिमज्जन दुर्वासाआयो १५ यहवृत्तान्तसुन-
तभेजबहीं। बाढ़ो क्रोधहिये तिनतबहीं॥ राजाके मारनहितसो-
ई। पटको भूमिजटा निजजोई १६ कृत्याकाल प्रगटभैतासों।
अग्निज्वाल प्रगटीअतिजासों॥ भस्मकरनराजाकेधाई। भगवत
दीन्हो चक्रपठाई १७ देखतचक्र सुदर्शन धाये। कृत्याको क्षण
माँझनशाये॥ पुनि दुर्वासाको रपटाये। दुर्वासाभागेभयपाये १८
भागे तीनोंलोक बिशेखा। चक्रसुदर्शन पीछेदेखा॥ ब्रह्मलोक
भय संयुतआये। त्राहित्राहि कहिवचनसुनाये १९ ब्रह्माकहोसु
नो ऋषिराई। भागौनतु पुरमोरनशाई॥ हैमम आयुपहर द्वैकेरी।
तिन आयुध समर्थ नहिं मेरी २० सुमत बचन दुर्वासा भागे।
पहुंचे शिवशंकरके आगे॥ चक्रताप तापित हमभारी। हौं

शंकर अबशरण तुम्हारी २१ सुनत शंभुबोले इमिबैना। इनसों राखि सकतहौंमैना॥ जिनमाया बहु मोहिंनचाई। तिनआ-युधसों कौन बचाई २२ रमानाथ के शरण सिधावो। तब तुम जीवदानको पावो॥ बेमनभये सुनत दुर्बाशा। चलेधारि श्री-हरिपद आशा २३ पहुँचे जाइ बिष्णुके आगे। अस्तुतिकरन लाग अनुरागे॥ रक्षाकीजे नाथ हमारी। निज आयुध सों लेउ उबारी २४ कहो बिष्णु सुनिये ऋषिराई। यद्यपि मैंहौं सकत बचाई॥ ममआधीन तदपि नहिं बाता। दुखदीन्हो मम भक्तहि ताता २५ सबतजि ध्यान हमारो धारैं। राजि पुत्र धनतीयबि-सारैं॥ तिनको हम त्यागैं किमि भाई। रहत भक्त आधीनसदा ई २६ भक्त भजैं मोकहँ मैं तिनहीं। प्राणसमान सदाप्रिय जिन-हीं॥भक्तिआश राखत मनमाहीं। मुक्तिनिरादर सदाकरहीं२७ आये आपशरण मम जासू। कहत उपाय बचनहित तासू॥ अम्बरीष शरणागत जैये। तौ तुम प्राणदान को पैये २८ सुनि दुर्बासा भये निरासा। पहुँचे अम्बरीष के पासा॥ त्राहि त्राहि कर बचन सुनाये। करिदण्डवत क्षमा करवाये २९ अमितदया भूपति उरआई। हरिआयुध को विनय सुनाई॥ कीन्हो तेज शांत तिन जबहीं। मुनि आदर कीन्हो बहु तबहीं ३० विविध भाँति भोजन करवाये। दुर्बासा दुखदूरिबहाये॥ बर्षप्रयंततिनहिं चलि गयऊ। अम्बरीष जल अन्ननकयऊ ३१ जहँसो दुर्बासा हैं भागे। ठाढ़े रहे भूप पग नांगे॥ दुर्बासा दुख देखि अपारा। शोच करत नृप बारहिंबारा ३२ धन्यभक्त रघुपति के जेई। परदुख सहि न सकत हैं तेई॥ उनको देइ कोउ दुखभारा। बेकबहूँ नहिंबैरसँभारा ३३ बिदा भये दुर्बासा जबहीं। भोजन करत भये नृप तबहीं॥ ऐसे नृपहरिभक्त सुजाना। पूरण सुयश पुराणबखाना ३४ कोऊएक नृपतिकी कन्या। यहप्रण करतभई सोधन्या॥ अम्बरीषसोंकरौंबिवाहा। औरेभूपतिकीनहिं चाहा३५ सुनि राजा इमि बचन प्रकाशा। हमको नेक नहीं अवकाशा॥

नहिं बिवाह इच्छामन आवत। हरिपूजन अह निशा गँवावत ३६ अतिशय हठ बिलोकि नरराई। दीन्ह आपनो खड्ग पठाई॥ तिही खड्ग सँग भयो बिवाहा। भयो नगर में अति उत्साहा ३७ न्यारो भवन बनो तिहि केरा। तहँ रानी वह करत बसेरा॥ पूजा जहाँ करत नरराई। एक दिवस तिहि मन्दिर आई ३८ सोवत नृपतिरहे तिहि बारा। रानी मन्दिर सकल बहारा॥ लेपनसेकन मन्दिर कीन्हा। पात्र शोधि तदुपरिधरिदीन्हा ३९ बहुरि पवित्र नीरधरि दयऊ। सामग्री पूजा सब कयऊ॥ आसनादि पुनि दीन्ह बिछाई। रानी निजमन्दिर पुनिआई ४० याप्रकार रानी नित जावै। पूजाके सब साज बनावै॥ राजा यह मनमाहँ बिचारी। जागे एक दिवस निशि सारी ४१ समय जानि रानी तहँ आई। पूजा साज करन मनलाई॥ लखि राजा बोले सुख पाई। तूको मोसों कहै बुझाई ४२ ममसेवा चोरी तू कीन्हा। दिन बहु गये आजु लखिलीन्हा॥ सुनि रानी बोली वह सोई। दासी नई आपकी होई ४३ देखि भक्ति बोले नरराई। पूजाअलग करौ सुख पाई॥ आज्ञा पाइ सुपूजन लागी। भगवतपूजन में अनुरागी ४४ लखि भगवत प्रसन्न अति भयऊ। राजा महामोद मनकयऊ॥ या रानीकी कथा सुहाई। निष्ठाप्रेम सुविस्तृत गाई ४५ राजा की प्रसन्नता जानी। लागीं हरिसेवै सब रानी॥ पुरबासी हरिसेवन लागे। भे प्रसन्न भूपति सुख पागे ४६ सब रानिन के मन्दिर जावैं। पुरबासिन के भवन सिधावैं॥ सबसों करैं अमित उपदेशा। हरिसुमिरे सबकटत कलेशा ४७ या विधि अम्बरीष रजधानी। घरघरभक्ति प्रगट सुखदानी॥ चलेपरम पद जब नरनाथा। बासी अवध गये सब साथा ४८ अम्बरीष की कथा सुहाई। सुनत भक्ति आवत उरधाई॥ जो फल यज्ञ किये नहिं आवै। जियालाल सोई फल पावै ४६॥

दोहा। रुक्मगांद भूपतिकथा अबबरणौं सुखखानि। भक्ति पुराणनमें विदित जियालाल सुददानि ५०, पुष्पबाटिका तासु

की शोभागंध्रसमेत। देवबधूटी आवहीं तहँ बिहरनके हेत ५१
एकसमयकी बात देवदारआई तहां। कंटक बदरीजात लागो
ताकी देहमें ५२ चौ०। भई अशुद्ध न सकी उड़ाई। बोली
माली सुता बुलाई ॥ कियोव्रतैकादशि होकोई। देउ दिवाइ
हमैं फल सोई ५३ तौहम स्वर्गलोकको जाई। यह बृत्तान्त
सुनो नरराई ॥ आइकहोता देवीपाहीं। हमएकादशि जानत
नाहीं ५४ सुनत सुरीमन आनँदपाई। व्रत विधि माहातम सब
गाई ॥ सुनिनृप नगरमशोधकरायो। चेरीएक तहां सुनि
पायो ५५ मारीगई न भोजन कीन्हा। दिन निशि निद्राहू
तजिदीन्हा ॥ ताहि बोलि पुनि पुण्य दिवाई। देवी गईस्वर्ग
तबधाई ५६ देखिभूपअचरज मनकीन्हा। आज्ञा देश नगर
सबदीन्हा ॥ एकदशी करौ सब कोई। व्रतउत्तम यासम नहिं
होई ५७ ऐसोभयो बरत परचारा। हस्त्यश्वन प्रावंतआहारा ॥
कन्यानृपति निष्ठव्रत भारी। तापति आंत्रित भो इकबारी ५८
एकादशी केर दिन होऊ। देखादेखि रहो व्रतसोऊ ॥ लागी
क्षुधा बिकल अति भयऊ। तबहिं चाहभोजन की कयऊ ५९
कन्यामाहातमको जानैं। भोजन देनकियोनहिं कानै ॥ कछुक
बेर में तन तजि दयऊ। भगवत धाम काहँ सो गयऊ ६०
कन्याअतिप्रसन्न मनकीन्हा। भगवत अस्तुतिमें मनदीन्हा ॥
सोऊ प्राणतजो सुखपाई। यति समीप हरिलोक सिधाई ६१ ॥

इतिश्रीभगवद्भक्ताऽनुरागदायकजियालालजन्माग्रेणविरचिते
चतुर्विंशतिनिष्ठामध्येएकादशव्रतनिष्ठायांद्वैभक्तकथावर्णनो
नामभक्ताम्बुनिधौत्रयोदशस्तरङ्गः॥ १३ ॥

छन्दबरवा ॥ निष्ठाद्वादश महिमा महाप्रसाद। कहौं कथा
युगभक्तन युत अहलाद ॥ चरण कमल हरि रेखाजम्बू नौमि।
हयग्रीव अंवतारहि बन्दौं सौमि १ देशकामरूधारो यहअव
तार। सुरसहायताकीन्ही दुष्टन मार ॥ याविधि बाणीभगवत
गीतामाहँ। मखतप जप भोजन अरपै मोकाहँ २ दो०। भो-

जनादि सामा जिती होइनई तय्यार। करिअर्पण हरिके हितै पुनिकर अंगीकार ३ कहभगवत गीताविषे पत्रपुष्प फलवारि। देइ भक्त जो भक्तियुत भोगौमैं सुखकारि ४ चौ०। भोजन हरिप्रसाद के कीन्हे। शास्त्र बिहित कर्मन चित दीन्हे॥ अन्तष्करण अमल तिहिसोई। नेहचरण भगवत के होई ५ कहत पुराण वरणि यह सोई। हरिप्रसाद महिमा अति होई॥ कोटिन बरत केर फलआवै। हरिप्रसाद किणकाजो पावै ६ हरिप्रसाद भोजन करकोई। मानसरोग नाश सब होई॥ जे भगवत प्रसादको पावैं। ते भगवत के लोक सिधावैं ७ भोजन कर बिन अरपे जोई। बिष्ठासम पुराणकह सोई॥ रुधिर समान बारिवह होई। भगवत हित अरपो नहिं जोई ८ यमयातनालहत नहिं सोई। हरिप्रसाद पावत नरजोई॥ मूरति पूजै भोग लगावै। हरिजिमाइसो जूठनि पावै ६ होइन मूरति ध्यान लगावै। ध्यानमहहरिभोजन करवावै॥ धारत ध्यानयदा नहिं बनई। नामोच्चारमंत्रमुख भनई १०, हरिनारायण भोजन कीजै। पुनिमोकहँ जूठनि निज दीजै॥ या विधि हरिप्रसाद सुखदाई। भोजन करै महामुदपाई ११ यांहू भांति बनै ना पूजा। तासम भाग्यहीन को दूजा॥ होत प्रसाद नाम के लीन्हे। प्रेम सहित अर्प्पण के कीन्हे १२॥

चौ०। अंगद कथाकहौं सुखपाये। राजपूत हरिभक्त कहाये॥ भगवत विमुख प्रथमये भारी। भगवत भक्त रही तिननारी १३ एकसमयआये गुरुवाके। कथाकहन हरि ताघर लागे॥ ताही क्षण अंगद तहँ आये। देखि क्रोध मानस उपजाये १४ खेदि दीन्ह तियके गुरु काहीं। दाराढुखितभई मनमाहीं॥ भोजन त्यागि दीन सो नारी। गुरुअपमान शोक उरधारी १५ अंगद को वह नारि पियारी। दुखितदेखि कीन्हो दुखभारी॥ बोले बिना कछू नहिं भावै। बोलन हित बहु किये उपावै १६ नानाभांति ताहि समुझावा। रानी उरनहरो दुखदावा॥ अंगद माथ

चरणमें आना । परताको कछुनाहिं सुहाना १७ अंगदजोरि कहो कर दोई । आज्ञाहोइ करौं मैं सोई ॥ बोली सुनतहरो उर तापू । गुरुकी शरण जाइये आपू १८ तौहम तुमसों नेहलगावैं । नाहित सुरपुर प्राण पठावैं ॥ भक्तिकरौ पुनि अंगीकारा । नाहित प्राण जात इहि बारा १९ सुनि अंगद गुरुके ढिगगयऊ । मंत्र श्रवण तिन सों करि लयऊ ॥ मालातिलक धरो निजदेहा । लाये गुरुलवाइ पुनि गेहा २० सेवा करन लाग गुरुकेरी । उपजी मानस भक्तिघनेरी ॥ गुरुसेवामाहात्म्य अपारा । अंगद हियो बिमल बपु धारा २१ दो० । एक समय राजाचढ़े बिजय हेत इक देश । बिजय तहां पावत भये लीन्हों जीति नरेश २२ लूटि राजधानी बिषे होत भई तिहि काल । अंगद पायो ताजबरशतैक हीराजाल २३ चौ० । शतहीरावेंचेघरआई । साधुन भोजन दीन्ह कराई ॥ रहो एक सो बांधोपागा । जगन्नाथ अर्पण अनुरागा २४ हीरा प्रगट भयो रजधानी । सुनि यह हाल भूप कहबानी ॥ लूटिमाफसब भई तुम्हारी । हीरा हम चाहत सुखकारी २५ परहीरा अंगद नहिं दीन्हो । लोगन कहो कान नहिं कीन्हो ॥ अंगद कहत बचन इमि भयऊ । हीरा जगन्नाथ कहँ दयऊ २६ ताको पाइसकै नहिं कोई । यह कहिकै घरआये सोई ॥ इनकी एक बहिन रहजोई । करत रसोईनितप्रति सोई २७ ताकीकन्या इन संग खावै । बिना संगताको नहिं भावै ॥ यह बृत्तान्त एक दिन भयऊ । राजातातिय लालच दयऊ २८ लालचके फन्दा परिसोई । दियोहलाहल डारिरसोई ॥ अंगद जबं जेवनकोआये । बहिनसुताको तबहिंबुलाये २९ राखेउतिहिचुराइबहनारी । अंगदहू तजिभोजन थारी ॥ लखिहठहाल सकल कहिदीन्हा । अंगदसो भेंटनपुनि लीन्हा ३० हरिभोजन गुनिक्रोधहिधारा । घरसोंतत्क्षण ताहि निकारा ॥ हरिभोजन कीन्हो यह जानी । खायो आपहु अमृतमानी ३१ अंगद कीन्हों भोजन जबहीं । राजा महा मोद लह तबहीं ॥ दूत लखन आये बहु बारा । अंगद चित्तन म-

लिन निहारा ३२ बाढ़त तेज जात अधिकाई। रक्षा करत भये रघुराई॥ हरिप्रसाद अमृत सम जाना। अमृत तिनहिं भयो सुखदाना ३३ तेज गरल कर नेक न व्यापा। यह बिश्वास पूर्ण परतापा॥ राजा मन में रहो लजाई। तब अंगद बिचार मन आई ३४ दो०। जगन्नाथ जीके हितै वह हीरा सुख खानि। चले मार्ग लै सुभट नृप घेरत भे तहँ आनि ३५ बोले हीरा दीजिये नाहित करिये युद्ध। क्षण बिलम्ब करिये इतै अंगद कह चित शुद्ध ३६ जाइ तड़ाग समीप पुनि बोले या बिधि बैन। हीरा लीजै आपनो राखि सकत अब मैन ३७ यह कहि फेंको जल बिषे भक्त बचन सुनि नाथ। कोस सप्तशत आइकै लीन्हों हीरा हाथ ३८ राजा सुनि वृत्तान्त यह उलचायो जलकाहँ। हीरा तहँ पायो नहीं भो लज्जित मनमाहँ ३९ अंगद घर आवत भये हरि आज्ञा पूजारं। दीन्ह रसीद पठाइकै हीरा की तिहि बार ४० अंगद सुनि हर्षित भये गये पुरी जगनाथ। हीरा हरि भुज देखिकै तिनहिं नवायो माथ ४१ जगन्नाथ के भुजा माधि अबहूं शोभित सोइ। ऐसो हीरा सुनिपरत नाहीं दूसरकोई ४२ अंगद कीन्हों बास तहँ सुनि पायो नृप एह। दूत पठायो लेन हित तिनके सहित सनेह ४३ अंगद तहँ आये नहीं सुनि राजा दुख पाइ। दीन्ह अन्न जल छोड़िकै राज काज बिसराइ ४४ बिप्रन मुख अंगद सुनो राजा दुखी महान। तबतापुर आये सुनत राजा आनँद मान ४५ मिले अगारी आइ कै लाये भवन सनेह। चरणन शिर धारत भये मिलत भये भरि देह ४६ चौ०। अंगद देखत हिये लगायो। भगवत भक्ति तहाँ प्रगटायो॥ अंगीकार करायो एहा। सेवा साधु करौ युत नेहा ४७ भगवत भक्ति बहुरि उर धारौ। नर शरीर तब सुफल बिचारौ॥ सुनि राजा धन सम्पति लीन्हा। अंगद पर नौछावरि कीन्हा ४८ राजा भये शरण हरि केरी। भये कृतार्थ दारि दुख ढेरी॥ या बिधि अंगद कथा सुहाई। जियालाल बरणी मुददाई ४९॥

छन्दरामगीतिका ॥ कथा पुरुषोत्तम पुरी के नृपति की शुभ एह । भये भगवत भक्त हरिप्रसाद में अति नेह ॥ थोरही अपराध सो जिन काटियो निज हाथ । कहतहौं विस्तार संयुत तौ नहीं शुभ गाथ ५० रहे खेलत चौसरै भूपाल सो इक बार । जगन्नाथ प्रसाद ताच्चणलाइयो पूजार॥रहो दच्चिण हाथ पासा बाम आगे कीन्ह । तिरस्कार बिलोकि हरि परसाद नाहीं दीन ५१ चलो क्रोधित घूमि पीछे धाइयो भूपाल । च्चमा करि अपराध मोहिंप्रसाद देहु दयाल ॥ दीन्ह तबहिं पुजारि लै परसाद आये गेह । कीन्ह हम अपमान भूप बिचार कीन्हीं एह ५२ भुजा मेरो अधिक पातकि छिन्न कीजिय ताहि । काटिहै को हाथ मेरो कहौं काटै काहि ॥ छाँड़ि भूपति अशन दीन्हों शोक अति मन जासु । देखि अमित उदास भूपति कहो मंत्री तासु ५३ कौन दुख है रावरे मन कहौ मोसों तोन । सुनत भूप प्रकाश कीन्हों चहत मानस जौन ॥ एक आवत भूत निशि में करत शोर महान । हाथ डारि गवाच्च में यह शोच है नहिं आन ५४ आप बैठिय राति में वह आव जबहीं भूत । हाथडार गवाच्चमारियखड्गतत्र अकूत ॥ कहो मंत्री मारिहौं यह भाषि बैठो तत्र । हाथडारो भूपताथलभाषिराखो यत्र ५५ मरियो तब खड्गमंत्रीकटोभूपति हाथ । कीन्ह तदुपरिशोकमानस जानिकरनरनाथ ॥ कीजिये न बिचार अब कछु मोरिइच्छा एह । होइ भगवत विमुख जानिय भूतमानसतेह ५६ जगन्नाथ विलोकियाविधि भक्त प्रेम अपार । तेजमहाप्रसाद संयुत तासमै पूजार॥ कह पुजारिन सो बहुरि भगवान आनँद पाइ । नृपहि दै परसाद ताकर भग्नलावहुधाइ ५७ चले नृप उतकरन दर्शन जगन्नाथ निकेत । इतहि धावत जात सेवक लैप्रसाद सहेत ॥ मिले मारग बीच दोऊ देतमैं परसाद । पाइ आनँद भूपमानस लेनयुत अहलाद ५८ चहो दोऊ करउठावन प्रगट दूजो हाथ । प्रेम युत परसादलीन्हो हरिहि नायो माथ ॥ जाइ हरिके कीन्ह दर्शन कहैसो

सुख कौन ।कटो जो नरनाथकर मँगवाइकै हरितौन ५९ कहो देउलगाइ मेरी बाटिका सुखसार । होइ मरुवापुष्पको तरुजासु गंध अपार ॥ दीन्ह तुरित लगाइ सोकर बाटिका में जाइ। चढ़त प्रति दिन माथ श्रीहरि पुष्पश्राजहुँश्राइ ६० दो० । माहातम परसाद इमि निन्दतपापी जौन ॥ कोटिन नरक मँझाइकै नीचयोनिगत तौन ६१ ॥

सो० । कहौं सुरेश्वरनन्द गाथाअवसुख दायिनी ॥ चेला रामानन्द । भगवतभक्त महानभे ६२ दो० । महिमा महाप्रसाद की प्रगट कियो संसार । जिहि प्रभाव तारे अमित दुष्टजनन भवपार ६३ एकसमय मारग चले जातरहे हे सोइ । मद्यमांस धरिपात्र में आगे लायोकोइ ६४ कहो महापरसादयह सुनत लियो तिन खाइ । चेला तिन आये बहुरि उनहूँलीन्होंपाइ ६५ चेलन सों पूँछत भये कासायो तुम एह । कहो आपुजो खाइयो सोई धारिसनेह ६६ कह स्वामी यह मांस है हमखायो परसाद । कियो बमन यह भाषिकै तिनहिं करावन याद ६७ तामें तुलसीदल गिरे गंगरेणुका और । देखिशिष्य लज्जित भये जानि भक्त शिरमौर ६८ समरथ को विषअमृत है अभी गरल असमर्थ । हर विष आभूषण भयो अमृत राहु अनर्थ ६९ ॥

दो० । बासी श्वेत द्वीपके भगवत भक्त नवीन । जहँ विहार अस्थान है भगवत का सुख भीन ७० चौ० । एकसमय नारद तहँ आये । ज्ञान सिखावन को मनलाये ॥ कहभगवत येभक्त सदाई । ज्ञानान्यत्रसिखावहुजाई ७१ सुनि नारद मनभये उदासा । गेवैकुण्ठधाम हरिपासा ॥ तिनसों कह वृत्तान्त सुनाई । कहो विष्णुमन आँनदपाई ७२ बासीसत्य तहांके ऐसे । चलौ लखावैं तुमकहँ जैसे ॥ आइ लखोतहँ पच्छी एँका । जल समीप बैठोहरिटेका ७३ नारद सो भगवत कहि दीन्हा । बर्षहजार गतन जल पीन्हा ॥ हरिप्रसाद कर बारिन पायो । तासों

यह बहु दिवस गँवायो ७४ यह कहिहरि प्रसाद जल डारा।
पक्षी लखत चोंच निजधारा॥ आगे चले चरित यह देखी।
भगवत मन्दिर लखो विशेखी ७५ ताक्षण होन आरती लागी।
सुनत लोगधाये अनुरागी॥दर्शन हेतभक्तइकधावा। बन्दकिवारे
विष्णु सुनावा ७६ सुनतहि तुरततजे तिहि प्राना। पुहुमी गिरो
निराशानिदाना॥ तिहिअवसरनारीतिहिआई। देखि विष्णु बोले
सुखपाई ७७ याकी क्रियाकरै किनजाई। सुनतदारबोली ताठाई॥
कोतूहै हरिबिमुख महाई। हरिदर्शन तजिक्रिया बताई ७८ का
बिधि दरश करौ हरिभाखे। बन्द किवार बिष्णु करि राखे॥
सुनि महिलाहू तनतजि दयऊ। तासु पुत्र तापीछे गयऊ ७९
बन्दकिवारकहे हरिताहीं। सोऊ गिरो मृतक भूमाहीं॥ हरि
नारद देखत सुखपागी। आरति होन दूसरी लागी ८० घंटा
शंख बजे तिहि काला। धाये प्रेमी सुनत बिहाला॥सो सुनि
उठे मरे जन सोई। पहुँचे जहँ आरति हरिहोई ८१ नारदलखि
अचरज मनआना। धन्यभक्त निज मानस जाना॥ धनि
यह श्वेत द्वीप कहावा। जाजन प्रेम थाह नहिं पावा ८२ हरि
नारद बैकुण्ठ सिधाये। भगवत भक्त भवननिज आये॥ श्वेत
द्वीप कथा यह नीकी। भवभय हरणि बिषयरसफीकी ८३॥
इतिश्रीभगवद्भक्ताऽनुरागदायक जियालालजन्माग्रेणबिरचिते
चतुर्विंशतिनिष्ठामध्येद्वादशमहाप्रसादमहिमानिष्ठायांवेदभक्त
कथावर्णनोनामभक्ताम्बुनिधौचतुर्दशस्तरङ्गः १४॥

दो०। कहत त्रयोदश अब सुभग निष्ठाभगवतधाम। जामें
बसुभक्तन कथा बरणी सुभग ललाम १ अर्द्धचन्द्र रेखासुभग हरि
हल्लक पदनौमि। पुनिबामन अवतारहरि बिनयसुनावों सौमि
२ देवनकी रच्छाहितै लैप्रयाग अवतार। बलिहिछलो धरिदेह लघु
पुनि कीन्हों बिस्तार ३ चौ०। भगवत धाम अर्थ अतिभारी।
ताको कौन सकै बिस्तारी। भगवत देह धाम है सोई॥ तामें
निष्ठाधारत कोई ४ सार्ष्टि मुक्ति को तेनर जावें। जगको आवा-

गमन नशावैं॥ धाम बहुरि हरिलोक बखाना। तामें निष्ठा कोऊ आना ५ सो सामीप्य मुक्ति को पावैं। बहुरि न यह जगजाल मँझावैं॥ भगवत क्षेत्र धामहैं सोई। जगन्नाथ पुरुषोत्तमजोई ६ बदरीवन नारायण जहँवाँ। नरसमेत शोभितहैं तहँवाँ॥ लक्ष्मी जहाँ प्रसाद बनावैं। करिपूजा नारद गुणगावैं ७ उद्धव अपर धनेश बिराजैं। ध्यानधारि मानस तपसाजैं॥ सन्मुख गरुड़ जोरिकर ठाढ़े। हरिसेवा हित आनँद बाढ़े ८ जय अरु विजयपार्षदराजैं। दर्शन करत अखिलअघ भाजैं॥ परशुराम मुचुकुन्द समेता। भगवत सुमिरण करत सचेता ९ दो०। कोटिन मुनि राजत जहां जियालाल सुखदाइ। महिमा अगम अपारहै पारलहै को गाइ १० चौ०। बहत द्वारजिन सुरसरिधारा। देखत होत पापजरिछारा॥ तप्तकुण्ड राजत तहँसोई। मज्जन करि निर्मल बपुहोई ११ कोटिन तीरथ तहां सुहाये। मैं बिस्तार हेतनहिंगाये॥ कोटिनपर्वत तहाँ बिराजत। गंगधारकोटिन छबि साजत १२ औरौकोटिन क्षेत्रसुहाये। धामनिष्ठपुरुषन हितगाये॥ धामतेजको नामकहायो। कोऊतानिष्ठा में गायो १३ ज्योतिरूप हरि तेज कहावै। अगम अपार वेद जिहि गावै॥ सूरज चन्द्रानल जहँ नाहीं। ध्यानमांझ योगीजन जाहीं १४ षटचक्रन भेदें तेशूरा। उतरैंघाटत्रिवेणीपूरा॥ त्रिकुटी धामकरैं पुनिबासा। तबहिं ज्योति कर लखैं प्रकासा १५ सो सायुज्य मुक्तिजन पावैं। तिनके भाग कौन कबिगावैं॥ ज्ञानध्यान निष्ठाहै आगे। यहां न बरणों मैं तिहिलागे १६ भक्तधाम निष्ठाजे गाये। बरणौं तिनके नाम सुहाये॥ कागभुशुण्डि प्रथमयहगाथा। बरणौं नाइ माथरघुनाथा १७ दो०। महिमा कागभुशुण्डिकी कोकबिकरैबखान। लिखी पुराणन में जिती लिखी न जात प्रमान १८ कथा कछुक बर्णन करौं यह निष्ठामेंसोइ। जाको सुनि दुखनाशई पुनिविवेक उरहोइ १९ चौ०। प्रथमहि भये अवधपुर माहीं।

शूद्रवर्ण धारो तनकाहीं। एकसमय तहँ परोदुकाला ॥ गये भा-
जिउज्जैन बिहाला २० कछुदिन तहां बास पुनि कीन्हा। पुनि
उपदेश मंत्रकरलीन्हा ॥ गुरुदीन्हो जो मंत्र बताई। जपत शि-
वालय में नित जाई २१ एक समय तिनके गुरु आये। साभि-
मान नहिं शीशनवाये ॥ शंकर देखि क्रोधमनकयऊ। ताको
शाप देत इमि भयऊ २२ दश सहस्र संवत लगि देहा। धारे
सर्प्पयोनिशठएहा ॥ गुरुहि प्रणाम कीन्ह शठनाहीं। अजगर
समधारोतनकाहीं २३ यद्यपि गुरुके स्वल्प न क्रोधा। दीमैंशाप
तदपि हित बोधा ॥ सुनतगुरु हाहाकरि धाये। अस्तुतिकरि
बहु विनय सुनाये २४ नमोनमरशंकर सुखराशी। ईशेशान
शंभु अविनाशी ॥ जै सर्वज्ञ कृपा सुख सिंधो। दीनदयाकर
आरत बंधो २५ जैगिरिजापति जैकामारी। जैजनपातक ति-
मिरतमारी ॥ भालचन्द्र शोभित शिर गङ्गा। ब्याल बिभूति
बिराजत अङ्गा २६ दो०। क्षमाकरहु अपराध प्रभु ममबिनती
सुनिकान ॥ शापानुग्रह कीजिये चाह न मानसआन २७ वा-
ह्वाग्रकेबचनसुनि बोले शंकरबैन ॥ अवशिधारिहै उरगतन
यामें मिथ्या हैन २८ जन्ममरण दुखहोइ नहिं सुनिये विप्र
प्रवीन ॥ जिमिजीरण पट परिहरै धारै कोउ नवीन २९ यह
कहिबोले शूद्रसों सुनहुवचनपरमान ॥ विप्रनिरादर नहिंकरिय
तापर गुरु सुखदान ३० ब्रह्मकमण्डलु चक्रहरि ममत्रिशूल
यमदण्ड ॥ वरुणपाश हरि वज्रहू करै न जातन खण्ड ३१
विप्रक्रोधवरहीप्रबल भस्महोइतनतासु ॥ अवननिरादरकीजियो
विष्णुवास है जासु ३२ जन्म अवधपुरमें भयो ताकारणको
पाइ ॥ ब्यासभक्ति शुभ होइ है तवमानस रघुराइ ३३ मम
कृपयासुनिये बहुरि अवधपुरी परभाव ॥ अक्षयगतिको पाइहौ
आवागमन नशाव ३४ कालपाइ पुनि शूद्रवर अहितन
कीन्हप्रवेश ॥ तनधरित्यागेबहुरि शंभुबचनउपदेश ३५ पायो
सुन्दर बिप्रतनु शापअन्तकोपाइ ॥ मातुपिता तिनकेमरे लखि

बनगये सिधाइ ३६ देखिऋषिनको बनविषे पूछततिनसोंजाइ ॥ सुन्दर मोसों बरणिये ॥ श्रीचरित्र रघुराइ ३७ मिले बहुरि लोमशतहां तिनसों पूछनलीन ॥ रामकथा बरणियकछुक हे ऋषि परमप्रबीन ३८ सुनि लोमश बरणी कछुक सगुण लीलाहेत ॥ पुनि निर्गुण बर्णन लगे सुन्दर सुखद सचेत ३९ सुनिये ऋषिजन्माग्रकह राम चरित जलपाइ ॥ सुखी सदा मनमीन है सो कैसे बिलगाइ ४० सुनि लोमश बर्णन कियो सगुणरूप कछु और ॥ पुनि निर्गुण वर्णन लगे जानि हिये शिरमौर ४१ सुनत बिप्र खण्डन कियो निर्गुण सर्गुण थाप ॥ लोमश खण्डत सर्गुणहि निर्गुण थापत आप ४२ बाद परस्पर होतही प्रगटो तहां बिवाद । क्रोधहिये लोमश भयो या बिधि बचन जगाद ४३ काग सरिस तव बुद्धिहै कांवकांव लगिज़ात ॥ सत्य बचन मानैनहीं राखै अपनी बात ४४ तासों धारिय कागतन कहत न लागी बार ॥ सपदि लहो तिन कागतन भय न हिये कछुधार ४५ करिप्रणाम लोमश चरण तत्त्वण चलेउड़ाइ ॥ देखि दयाकीन्ही हिये मुनिबर राघवराइ ४६ लखि लोमश लज्जित भये धीरज तिन उरदेखि ॥ लीन्ह समीप बुलाइ कै किय आश्वास बिशेषि ४७ बालरूप भगवत वपुष दीन्हो तिनहिं लखाइ ॥ राममंत्र उपदेश पुनि दीन्हो श्रवण सुनाय ४८ राम चरित्र सुनाय पुनि दीन्हो आशीर्बाद ॥ राम भक्ति दृढ़होय उर दायक मन अहलाद ४९ होउ सदा रघुबरहि प्रिय इच्छा पूरण होइ ॥ मृत्यु सदाआधीन तवजबचाहो तबसोइ ५० बसैं ज्ञान बैराग्य उर बहुरिकरौ जहँ बास ॥ योजन एक प्रयंतलो माया आव न पास ५१ श्री रघुनन्दन के चरित गुप्तकरैं उर बास ॥ सुनत कागहर्षित भयो जानि आपकोदास ५२ बियत बाग भै तावसर सत्य बचन ऋषि एह ॥ यह अनन्य ममभक्त है कीन्हो अधिक सनेह ५३ कागभुशुण्ड प्रसन्न उर ऋषिको कीन्ह प्रणाम ॥ नीलाचल पर्बत बहुरि जाइ कीन्ह निज

ठाम ५४ बीते कल्प अनन्त तहँ अबहूं करत निवास ॥ जिन सतसंगति पाइकै अधम भये हरिदास ५५ हंस रूप शंकर गये सुनी कथातहँ जाइ ॥ गरुड़मोह प्रगटो महा नाशोकथा सुनाइ ५६ यद्यपि ऐसेभक्तवर कागभुशुण्ड सुजान ॥ माया व्यापी तदपिउर किय कछु रामकृपान ५७ अहंकार आवत जबहिं भक्तहिये हरि जान ॥ माया दरशावत तबहिं हरण तासु उरमान ५८ ऐसोजो हरिनाकरैं उभयलोक सोजाइ ॥ माताज्यों शिशुको लखत तिमि भक्तन रघुराइ ५९ ॥

दो०। कथाकहों भगवंत की भगवत भक्त सुजान ॥ रहे आगरेके बिषे सूबा के दीवान ६० प्रीति प्रिया प्रीतम बिषे जिनकी रही अपार ॥ भजन भाव दिन प्रति करत प्रेम रूप उरसार ६१ बिधि निषेध न्यारे सदा धारेबैष्णवभेष। युगुल माधुरी रूप रस छके सदाहि बिशेष ६२ चौ०। वृन्दाबनबासी जो आवैं। भगवत समताको चितलावैं॥भोजन मधुरताहिकरवावैं। देहिं भेंट उर आनँदपावैं ६३ एकसमय तिनके गुरुआये। जेहरिदासनामकरिगाये॥ जिनसोंदूधभातहरिमांगा।जिनभगवतचरणनअनुरागा ६४ गुरुआगरे आये जानी। बोलत भये प्रियासों बानी ॥ ऐहैंआजगुरुममजोई। तिनको भेंटदेनकाहोई ६५ सुनि दाराकह हर्षिबहोरी। सुनियप्राणप्रतिबिनतीमोरी॥ बस्त्रएकतन पररखिलीजै। सारोभुवनगुरुहितदीजै ६६ सुनिभगवंतमोदमन आना। धन्यभाग आपनकरिजाना॥ महिलाकीबहुकरीबड़ाई। धन्यकामिनी तू जगआई ६७ दम्पतिमंत्र जानिमनमाहीं। गुरू गयेतिनके घरताहीं ॥ भक्तिदेखि आनँद मनमाना। बस्तु लेन यह अनुचित जाना ६८ यह बिचारि बृन्दाबन आये। सुनि भगवन्त महा दुख पाये॥ सूबासों पुनि मांगि बिदाई। वृन्दाबन पहुंचे सो जाई ६९ यात्रा आदिकरी सुखपाई ॥ भगवत चरित सुने मनलाई। बिरचे भगवंत चरित सुहाये ॥ नानाभांति पुराणन गाये ७० एक समय ब्रजबासी कोई। लीन्ह चुराइ बस्तु

सब जोई ॥ लखि भगवंत हर्ष अति पाये । याविधिसों पुनि वचन सुनाये ७१ जिन चुराइ गोपिन दधिखायो । माल हमारो आजु चुरायो ॥ चोरीको मग छांड़तनाहीं । हम नीके जानत मनमाहीं ७२ ऐसो प्रेम भावसरसाना । जियालाल किमि जाइ बखाना ॥ याबिधि प्रेम धारि सुखपाये । भगवतको मानस अपनाये ७३ ॥

चौ० । अब हरिदास कथा सुखदाई ॥ वरणों रघुनन्दन शिर नाई । वर्ण तृतीय जन्म जिनकेरा । भगवत भक्ति हिये सब बेरा ७४ काशी निकट बास जिनहोई । प्रण पूरण कीन्हो निज सोई ॥ यह प्रणकरत भये मनमाहीं । बृन्दावन त्यागैं तनकाहीं ७५ ज्वरसंयोग विवशतिनआवा । भिषगौषधमें मन नहिंलावा ॥ बृन्दाबनहि चले चढ़ियाना । मारग प्राण न कीन्ह पयाना ७६ सोपरन्तु पूरण प्रण कारण । दोसर देह कीन्ह तनुधारण ॥ अति प्रसन्न बृन्दाबन आये । गुरुहिमिले पग शीश नवाये ७७ सुन्दर दास गुरू जिनकेरे । प्रेमभाव सों नयनन हेरे ॥ पुनि सत्सङ्ग कीन्ह तहँ नाना । भगवत चरित सुने किय गाना ७८ तदुपरि चीरघाट चलिआये । करिमज्जन अतिशय सुखपाये ॥ दीन्ही देह त्यागि तिहि तीरा । साथीआये बहुरि अधीरा ७९ देह दग्ध करि रोदत आये । तिन गुरु सों वृत्तान्त सुनाये ॥ सुन्दर दास कही सुनि बानी । यह चरित्र निज मानस आनी ८० मम समीप आये हरिदासा । अबकीन्हो श्रीहरिपुर बासा । प्रण अपनो पूरण उन कीन्हो । यमुना कूल देह तजि दीन्हो ८१ सुनि सबकेमन निश्चयआई । धन्यभक्त इमिकरत बड़ाई ॥ सदा भक्त प्रणराखतरामा । बिदित पुराणन कीर्त्तिललामा ८२ जो यह कथा सुनै अरु गावै । भगवत भक्ति तासु उर आवै ॥ धन्य सङ्ग संतनकोगायो । जासुप्रताप बिदित श्रुतिगायो ८३ ॥

दो० । मधुगुसाइँकी अबकथा वरणौं सुन्दरएह । रसिक प्रिया प्रीतमबिषे धारो पूरणनेह ८४ बङ्गाले सों चलि तबै वृन्दाबनमें आव । दर्शनकी आशाकिये ढूँढ़त ब्रजसबठांव ८५ खान

पानत्यागे सबै निद्रादिक तजिदीन ॥ भक्तिभाव श्रीपति निरखि कृपावलोकन कीन ८६ बंशीबट यमुनानिकट दर्शन दीन्ह मुरारि ॥ सुन्दरश्याम स्वरूपशिर मुकुटायुत भुजचारि ८७ मणिगण आभूषणसजे लकुट मुरलिकर सोह ॥ सखा सङ्ग शोभित बपुष निरखत जनमन मोह ८८ देखिरूप सुंदर सुखद भये ब्रह्ममयतौन ॥ चरणगहे पुनि प्रीतियुत भाग कहै कबिकौन ८९ जिन पदरज ब्रह्मादिकन दुर्लभ बर्णतवेद ॥ कृपाकीन्ह जिन भक्तपर दै दर्शन हरखेद ९० ॥

छन्द रामगीतिका ॥ कथा यह भूगर्भजो हरिमधुर लीला धार। छांड़िसब घरबार कीन्हों भक्तिअंगीकार ॥ आइ बृन्दा बिपिन कीन्हो बास निश्चलताहँ। कुञ्ज गोबिन्देवधारा भाव मानसजाहँ ९१ ॥

दो०। काशीश्वरजी की कथा बंरणौं रहे गुसाइँ। प्रथम रहे अवधूतये पुरुषोत्तम पुरजाइ ९२ श्रीकृष्ण चैतन्यप्रभु के चेलेभे सोइ। वृन्दाबन आये बहुरि गुरुआज्ञा लैजोइ ९३ मग्नप्रेम आनन्दमें भये कृतारथरूप ॥ सेवा गोविन्देवकर धरिहिय भावअनूप ९४ ॥

छन्दबरवा ॥ कथा प्रबोधानन्द कि यहसुखदाइ। सरस्वती संन्यासी शिष्य कहाइ ॥ श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभुकेर। परमरसिक प्रिय प्रीतम बिहारहेर ९५ रचना काव्य बनाई ललित अपार। कोटिनपूरुष पढ़िसुनि आनँदधार ॥ युगुलकिशोर बिलोकत आनँदपाइ। जिमिचकोर बिधु सन्मुखरहै लुभाइ ९६ ॥

छन्द ॥ लालमतीकी गाथा सुन्दरएह। चाहिय लाभजुपाये मानुषदेह ॥ लालमतीसो पायोलाये नेह। चरणकमल अन्यत्रन चाहत गेह ९७ ॥

इतिश्रीभगवद्भक्तानुरागदायक जियालालजन्माग्रेण विरचिते चतुर्विंशतिनिष्ठामध्ये त्रयोदशभगवतधामनिष्ठायां वसुभक्त कथावर्णनोनाम भक्ताम्बुनिधौपंचदशस्तरङ्गः १५ ॥

छन्दबरवा ॥ कहौं चतुर्दश निष्ठा भगवत नाम । कथा पांच भक्तन की अति सुखधाम ॥ कोणषट्कपदरेखा श्रीपति नौमि। परशुराम अवतारहि बन्दौं सौमि १ माधवशुक्ल तृतीया लै अवतार । परशुधार खरकर धरिहरभूभार ॥ प्रकृति २१ बारभूकीन्ही क्षत्रि बिहीन । सादर विप्रन च्छोणी लैलै दीन २ यद्यपि नामोच्चारण कीर्त्तन माहँ ॥ पर सुमिरणसम्बन्धम जानिकयाहँ । निष्ठा भिन्न सुथापित कीन्ही एह ॥ वेद पुराण बड़ाई करत सनेह ३ महिमा नाम कि भारी पारन जासु। नित्यनये सहसानन गावत आसु ॥ शंभुसदा उर धारे त्यागत नाहिं । सनकादिक जिहि सुमिरत नितमन माहिं ४ नारद शारद गावत गणप दिनेश । बरुणकाल यमधारे हिये हमेश ॥ सुख अनन्त भक्तन के राजत सोइ । जियालाल सुख जानत कोटिन कोइ ५ यमन हरांम पुकारो गोहरि धाम । बालमीकि जगजाना उलटें नाम ॥ जगत उधारन गायो नाम प्रताप । है दोसरि विधि नाहीं दारन पाप ६ जाने बिन जाने सुमिरै हरि नाम । लहि पारस अमृत गुणलह हरि धाम ॥ नामोच्चारण कीन्हे भाव कुभाव । भगवत के पदजावै बेदबताव ७ जिमि औषध गुणकारी जानअजान । नाम प्रतापहुताबिधि लीजै मान ॥ प्रलयानल जिमि नाशत सब संसार । नामहुताबिधि नाशत पाप अपार ८ दो० । सोज्ञानीसोई तपी जपी कहावत तौन । श्री रघुवर के नाममें निश्चय लावत जौन ९ राम नाम सुमिरण किये पापास्पर्श न होत । होत कामना सिद्धहैं दिनदिन अधिक उदोत १० राम नाम आधारिबो पूर्ण सिद्धि कीमूल । श्वास बृथा खोवै नहीं भजहरि दारक शूल ११ सहस एक विंशति सहित षटशत ऊपरजान । नाम नित्य एतेजपै एती श्वास प्रमान १२ साढ़े तीनि शरीर पर रोमा कोटि प्रमान । एतेहू नामन जपै देहधारि सुखदान १३ सो० । नाम जपनकेहेत येदोऊ बिधि जो कहीं । जेननामचित देत तिनमन

करि अंकुशहिते १४ नामामिय फल एह मुखसों त्यागन योग नहिं। दुर्लभ मानुषदेह पायो गायो वेदधनि १५॥

चौ०॥ श्रीरघुनन्दनपद शिरनाई। कथा अजामिल कहौं बुझाई॥ पूर्वजन्मकर ब्राह्मणएहा। कानन तपकीन्हो युतनेहा १६ क्रिय चाण्डालि एककोध्याना। जादिन प्राणन कीन्हपयाना॥ याहू जन्म बिप्रभे आई। पापकर्मरत रहतसदाई १७ एक समय कानन चलिगयऊ। शूद्रीएक बिलोकत भयऊ॥ ताहि बिलोकि चित्त ललचाना। करिआदर निज मन्दिर आना १८ दीन्ही त्यागि सुकुल की नारी। माता पिता तजे सुखकारी॥ भयो मोह बश दार भुलाना। दीन्हों त्यागि कर्म निज नाना १९ खगमृग पलल हेतु बहुमारे। मद्य पान चोरी उरधारे॥ खेलत यूप जीविका एहा। लावत द्रब्य कुनारीनेहा २० भगवत भक्त एक दिन तहँवाँ। गे घर अजामील को जहँवाँ॥ बिन जाने आये तिन गेहा। अजामील कीन्हो अति नेहा २१ प्रेम सहित भोजन करवाये। पुनि आपन बृत्तान्त सुनाये॥ सुनतदया कीन्ही तिनभारी। अजामीलसों कहो बिचारी २२ अबकी होवै पुत्र तुमारो। तासु नाम नारायण धारो॥ कहि हरिभक्त पंथ निज लीन्हा। अजामील सोई बिधि कीन्हा २३ नारायण सो पुत्र पियारा। अजामील को भयो अपारा॥ खान पान ताबिन नहिं करहीं। ताहि बिलोकि सदा मुदभरहीं २४ अन्त समय तिनकेर बिचारी। शमनदूत गल बंधन डारी॥ ब्याकुल भये अजामिल जबहीं। पुत्राह्वान करत भे तबहीं २५ हो नारायण आवहु धाई। मैं अति दुखित बिलोकहु आई॥ मुख सों नारायण कह जबहीं। आइगये पार्षद हरि तबहीं २६ गल सों डारी पास निकारी। खेदि दीन यमदूतन मारी॥ या बिधि चरित अजामिलदेखी। मनमें आनँदलहो बिशेखी२७ अति प्रसन्न निज नयनउघारे। कहांगये ममराखनहारे॥ प्राण राखि लीन्हो जिन मेरा। सो न लखातमोहिं या बेरा २८ मैं अति

अधमकुपथमनलाई। परिहौं घोरनर्कमेंजाई॥धन्यधन्य हरिनामसु पावन। धिगधिग में अति अधम अपावन २९ धोखेनाम लीन जिनकेरा। प्राण दान पायो याबेरा॥ तिनकी शरण जाइ अब रहिहौं। संचित पाप कुणपके दहिहौं ३० गंग द्वार यह कहि चलिआये। करि समाधि हरिध्यान लगाये॥ पंचभूत मयतनुत-जि दीन्हा। हरिसमीप पार्षदतनु लीन्हा ३१ भगवतनाम जानि बिनगावा। भगवत धाम जाइ तिन पावा॥ भगवत नाम प्रेम युत गावै। सो कैसे हरिलोकन पावै३२ भगवत दूतजबहिं तहँआये। यमदूतनकहँ मारि भगाये॥ यमके दूतगये यमपासा। अजामी-लकर चरित प्रकासा३३ महाराज सुनिये मन लाई। अतिअच-रज किमि कहैं बुझाई॥ अजामील अति पातकिभारी। नारा-यण कहि पुत्र पुकारी ३४ ताके सुनत पुरुष शुचिआये। बय किशोर सब भांति सुहाये॥ हमहिं देखि भे क्रोधित भारी। दीन्हो खेदि बहुत बिधि मारी ३५ सुनिय नाथ अब लगिहम जाना। आपहिंईश अहैंनहिंआना॥ आज्ञादेसरोपरो लखाई॥ काहूलेन व्यर्थ हमजाई ३६ दूतनकेर बचन सुनिकाना। द्युमणि-सुवन या भांति बखाना॥ जोस्वामी हमार सुखआये। तिनके दूत बचावन आये ३७ जानेबिन जानेहरिनामा। पावत लिये अचल विश्रामा॥ अनखालसहु नाम जो लेई। ताहि कि दुख मम किंकरदेई ३८ तुम अपराध कीन्ह अतिभारी। क्षमाकरहिं श्रीपतिबनवारी॥ अबतुम याबिधि काम न करियो। मेरी सीख सदा उरधरियो ३९ याबिधि सुनि किंकर यमबानी। महिमा नाम धन्यकरि मानी॥ यमपायक ताहित भयकीन्हे। भागत अबहुँ नाम के लीन्हे ४०॥

सुन्दर कथा एक नृपकेरी। बरणौं दारक पातकढेरी॥ अन्तर भगवत प्रेम अपारा। विषय बुद्धि ऊपर बिस्तारा ४१ भगवत भक्तदार तिनकेरी। सोऊ अन्तर प्रेम न हेरी॥ ईश मनावत बारहिं बारा। कबहूँ नामकरहिं उच्चारा ४२ सोवत में भूपति

इकबारा। भगवत नाम कीन्ह उच्चारा ॥ रानी सुनिमन आनँद कीन्हा। दानामित विप्रनकहँ दीन्हा ४३ बिबिध भांति बजवाये बाजा। हैयह आजुकाह कहराजा॥ रानी दिय उत्तर सुखपाई। तब सुखकढ़ो नामरघुराई ४४ कहनृप सुखद नाम कढ़िगयऊ। किहिकारण शरीर रहिगयऊ ॥ त्यागीदेह तुरित कहिएहा। गयेपहुँचि श्रीपतिकेगेहा ४५ रानी या बिधि चरित निहारी। मनमलीन कीन्हा अति भारी ॥ मैं अति अधम भक्तनहिं जाना। कहि पति पीछे कीन पयाना ४६ ब्राह्मण एक भक्त रघुराई। मैके सोतिय चलो लवाई ॥ तिनकहँ मिलेमार्ग ठगआई। पूछो कहांजातहौ भाई ४७ सीधो मगजानत हम एहा। हमहूँ जाब आपने गेहा ॥ हम तुम साथ चलैं सुखपाई। सुनि ब्राह्मण मन चिंता आई ४८ ठगन कहो यामें छलनाहीं। रामचन्द्र साखी इहिमाहीं ॥ सुनत बिप्र दारा कह बानी। चलिय सङ्ग अब होइन हानी ४९ सब मिलि चले सघन बनमाहीं। मारो बिप्रहि ठगनतहांहीं ॥ लीन्हो धन योषितासमेता। आनन्दित निजचले निकेता ५० नितम्बिनी पीछे फिरि देखत। ठगन कहो अबकाको पेखत ॥ खसम तिहारो तौ मरिगयऊ। सुनि महिलातब उत्तर दयऊ ५१ साखी की नरहै तुमजाको। मैं पीछे फिरि देखत वाको ॥ कहो ठगन झूठी ये बातैं। रामचन्द्र अबकहां लखातैं ५२ इतनीकहतभई नहिंबारा। प्रगटे राम कृपाल उदारा ॥ धनुष बाण दोनों करधारे। अश्व सवार आइ ललकारे ५३ तुरित ठगन को मस्तक काटा। बिप्र जियाइचले लै बाटा ॥ जब बाडव गृहकीन्ह पयाना। आपुभये तब अंतर्द्धाना ५४ ॥

चौ०। अब कबीरकी कथासुहाई। बरणौं रामचरणशिरनाई ॥ काशी में जिनबास अनूपा। भगवत भक्त महासुख रूपा ५५ भक्ति प्रकाश जासुजगजांना। जासम और कर्म नंहिं माना॥ योग यज्ञ ब्रत दानहु जेते। भजन बिहीन बृथा सबतेते ५६ शून्य

समान साधना जाना । भगवत नाम अंक सममाना ॥ वृथा शून्यहै अंक बिहीना । सांकदहाइ वृथांककि बीना ५७ भगवत भक्ति सदाउरमाहीं । बर्ण धर्म को मानत नाहीं ॥ जाह्मण जन्म भयो तिनकेरा । वर्णाश्रम त्यागो ताबेरा ५८ भगवत भजन माहँ मनदीन्हा । नेकलाज कुलकी नहिंकीन्हा ॥ तिन हित भई बियत सो बानी । माला तिलक धरौ सुखदानी ५९ शिष्य होउ रामानँदकेरे । सुनि कबीर बिनती करिहेरे ॥ यमन जातिमें जन्म हमारा । मारग रामानन्दाचारा ६० मोकोशिष्य करहिंगे कैसे । कह आकाश गिरा बिधिजैसे ॥ सोई शीषाहिये निज धारी ।.पुनि अरुणोदय समयबिचारी ६१ रामानँद मज्जनजहँ जाहीं । पौढ़े तामारग के माहीं ॥ परो चरण तिन ऊपर जबहीं । राम राम बोले मुख तबहीं ६२ सुनि कबीर मन गुनि उपदेशा । माला तिलक बनायो भेषा ॥ लागेजपन मंत्रपुनि सोई । लखिकबीर माता वहजोई ६३ कुलआचरण भिन्न सो देखी । समुझायो बहुभांतिबिशेखी ॥ परकबीर मानीनहिं बाता । राखो रामचन्द्रसोंनाता ६४ प्रगटी बातनगरतिहिबेला । हैं कबीर रामानँदचेला ॥ रामानन्द सुनत बुलवायो । मैं वाको कब मंत्र सुनायो ६५ अंतरपट पूँछीयहबाता । सुनिकबीर बोलेहरषाता ॥ मज्जन हित जब आपसिधाये । रामनाम मगमोहिं सुनाये ६६ वेद पुराण सकलयहकहहीं । रामनाम सममंत्रनअहहीं ॥ महा मंत्र जिहिजपतमहेशा । काशीमुक्तिहेत उपदेशा ६७ पारबती सो शिवसमुझायो । सहस नाम समनामबतायो ॥ महामंत्र रामाक्षरदोई । तंत्र ब्रह्म वपु भाषतसोई ६८ सोई मंत्र मोहिंप्रभु दीन्हा । अब सन्देह कौन बिधि कीन्हा ॥ गुरू आपु मैं शिष्य तुम्हारा । यामें नहिं कछु औरबिचारा ६९ सुनि प्रसन्न रामानँद भयऊ । हिये लगाइ कबीरहिलयऊ ॥ भांति भांति उपदेश बताये । बिदाकिये निज मन्दिर आये ७० बीनि किंचिद शुकलें सोई । याही बिधि उद्यम नित होई ॥ बेंचन हाटगये इकबारा ।

मांगो साधु ताहि दैडारा ७१ भय सों भवन गये नहिं सोई। तिन मनमें चिन्ता अति होई॥ तिनहिं तीनदिन बीते जबहीं। भगवत सहिनसके यह तबहीं ७२ बनजारे कर भषबनाई। बृषभनलादि बस्तु बहु लाई॥ घर कबीर के दीन्हों लाई। ढूंढ़ेपर कबीरघरआई ७३ दो०। देखिबस्तु हरिकी कृपा उरआँनद अधिकान। प्रेमोदधि बूड़न लगे पायो पोत तहांन ७४ साधुन दीन्हों बांटि सब सुनि काशीके बिप्र। लेबे हेत कबीर ढिग आइ गये सो क्षिप्र ७५ तहां कछू पायो नहीं बोले क्रोध शरीर। बांटो बैरागिन सबै सुनहु जुलाह कबीर ७६ हमहूँ को दीजै कछू की काशी तजिजाहिं। भवन राखि बिप्रन गये जब देखा कछु नाहिं ७७ जांइ छपाने शोकयुत कालै दीजै बिप्र। भक्तदुःख अवलोकिकै प्रगटे भगवत क्षिप्र ७८ सो०। धरिकबीर को रूप आये तिन मन्दिर सुखद। प्रगटी द्रव्यअनूप दीन्हे बिप्रनअन्नधन ७९ दो०। पूरण काशीमेंभयो यशकबीर कोजोइ। कहकबीर सो जाइपुनि बिप्ररूप हरिसोइ ८० द्रव्यलुटावत आजुहै घरकबीर निजमाहँ। भाग्यहीन पहुँचे न किमि इहाँ भुलानो काहँ ८१ चौ०। सुनि कबीर मन आनँदपाये। अबिलम्बित निजमन्दिर आये॥ भगवतकृपा बिलोकी जबहीं। प्रेमानन्द मग्नभे तबहीं ८२ यहसिद्धता कबीर कि देखी। होन लागि तहँभीर विशेखी॥ भजन भंग मनजानि कबीरा। निन्दा हेत करीततबीरा ८३ वेश्याएक गलेकरडारे। गंगतोय शीशा करधारे॥ मदिरा भरमसबन उपजाये। गणिका सहँ घूमतसुख पाये ८४ भक्तन लखि चिन्तामनकीन्ही। विषयी निन्दाकरिबें लीन्ही॥ निन्दा कानलाग जबलोगा। भैबहुत ताके संयोगा ८५ तब कबीर यह रचा उपाई। पहुँचे राजसभामें जाई॥ बैठे मध्यसभाकेमाहीं। पूर्बसमानादरभोनाहीं ८६ उठि भूमध्य कलुक जलडारा। रामनाम बहुबार पुकारा॥ पूँछो नृपति हाल यह काहा। कहकबीर सुनिये नरनाहा ८७ जगन्नाथ श्रीकर

भण्डारा । लागोजरन रहै या बारा ॥ गंगाजलसों ताहिबुझायो । सुनि राजामन अचरजलायो ८८ दूत पठाइ हाल मँगवायो । सत्यजानि मनमें शरमायो ॥ रानीसहित गहेपदआई । पुनि अपराध क्षमाकरवाई ८९ दो० । क्षमाकियो अपराध पुनि भक्ति शीषदै ताहि । तहाँसो चले कबीर पुनि धरेनाम हियमाहि ९० सो० । रहो सिकन्दर नाम बादशाह तासमयमें । आयो काशी धाम यमन न बिप्रनसों सुनत ९१ बोलि कबीरहि लीन कहो सलामहि कीजिये । सुनि कबीर कहिदीन हमसलाम जानत नहीं ९२ नाहिं हमार कछु काम बादशाह सो जानिये । हमसुमिरत नित राम कामद श्री सीता रमण ९३ चौ० । बादशाह सुनिक्रोध बढ़ावा । बांधि जँजीरन गंग डरवा ॥ डूबे नहीं अग्नि डरवावा । जरे नहीं करिवर रौंदावा ९४ भागो करी देखि चिल्लाई । बादशाह आयो शरणाई ॥ चरणन परो भयातुर भारी । मैं किंकर यह बचन उचारी ९५ जो चाहौ हम सों लैलीजै । यह अपराध क्षमा अबकीजै ॥ राज कोश धनधाम तुम्हारा । मैं किंकर समेत परिवारा ९६ दो० । कह कबीर चाहौं नमें राज कोश धनधाम । चरणकमल सुमिरण करौं सदा हिये श्रीराम ९७ चौ० । कहि कबीर निजमन्दिर आये । काशी के बिप्रन सुनिपाये ॥ पुनि अपकार करन मन गुनिकै । साधू वेष बिप्र इक बनिकै ९८ सब साधुन सों जाइ पुकारा । असुकदिवस कबीर भण्डारा ॥ देश देश के साधूनाना । दिन गुनिगे कबीर अस्थाना ९९ दो० । भारी भीर बिलोकि कै जाइछपान कबीर । भक्त शोच देखिन सकत प्रगट भये रघुबीर १०० रूपकबीर बनाइ कै साधुन भोजन दीन । ऐसो भण्डारादयो बिना रामको कीन १०१ नाना बिधि सत्कारकरि गे कबीरके पास । साधू वेष बनाइकै प्रगट कियो यशजास १०२ सुनि कबीर आनँद लहो जानिकृपा रघुराइ । सो सुख बरणो जातनहिं गूंगमधुर ज्यों खाइ १०३एक

अप्सरा स्वर्ग सों आवपरीक्षाहेत । मोहनि रूप बनाइकै का-
मिनको सुखदेत १०४ नहिं कबीर मोहे निरखि छकेप्रेम रघुवीर।
रूप चतुर्भुज धारि हरि दिये दरशहर पीर १०५ बोले बहुरिक-
बीर सों देह सहित ममधाम। चलिये मेरेसाथही जहांअचलबि-
श्राम १०६ चौ०। तबहिं कबीर भक्ति दरशावन । मगह वेद
जिहि कहत अपावन॥ तहांजाइ तन युत हरिधामा ।जात
भये दरशावन कामा १०७ कीजहैं मरि गर्द्दभ तनुपावै ।
कर्म्मकाण्ड जो कुरत रहावै ॥ भगवत भक्त पुरुषहै जोई ।
काशी कोटि सकल भूसोई १०८ यमन आइ सबहिन यह
चाहा। देहैं कबुर कबीर जुलाहा ॥ साधू सबनआइ यहचाहा।
साधू ये करिहैं हम दाहा १०९ भयो बिबाद वस्त्र तब टारा।
निकसे सुन्दर पुष्प अपारा ॥ दोनों गये देहनहिं पाई। इमि
कबीर की कथासुहाई ११०॥

चौ० ॥ पद्म नाभ की कथा सुहावनि। बर्णन करौं सुजन
मनपावनि ॥ राम नाम के रसिक सुहाये ।केवल राम नाम
चित लाये १११ नीकी भांति परीक्षापावा ।कुष्ठीएक तहां चालि
आवा॥ देखो बिकल ताहि अति भारी। बोलत भये दयाउर
धारी ११२ रामनाम कहि मज्जि त्रिबारा। उत्तम अंगहोइअघ
छारा॥ सुनि ताही बिधि मज्जन कीन्हा। सुन्दर रूपराम करि
दीन्हा ११३ पद्मनाभ लखि आनँद पायो। गुरु कबीर सों जाइ
सुनायो॥ सुनि कबीर बोले यह बानी ।यह बड़ि बात कौन
अज्ञानी ११४ तीनिबार जो राम पुकारा। ताकी महिमा अगम
अपारा॥ एकबारजो नाम प्रकाशै।कोटि जन्मके पातक नाशै
११५दो०। यहसुनि दृढ़बिश्वासकरि नाम जपत युतनेह ।
रामतोय मन मीनकरि धरोप्रेम निज देह११६॥

इतिश्रीभगवद्भक्ताऽनुरागदायकजियालालजन्माग्रेणबिरचि
तेचतुर्बिंशतिनिष्ठामध्येचतुर्द्दशभगवतनामनिष्ठायांपंच
भक्तकथावर्णनोनामभक्ताम्बुनिधौषोड़शस्तरङ्गः१६॥

सो०। श्रीरघुबर पदनौमि पंचदशम निष्ठाकहत। ज्ञानध्यानजहँ सौमि द्वादश भक्तनकी कथा १ हरिपद कमलानूप मत्स्यरेख बन्दन करौं। सनत्कुमार सुरूप धारो ज्ञानाम्बुधिसुखद २ ब्रह्मलोक अवतार भगवत यह धारत भये। तिनपद निज हियधार यह निष्ठावर्णन करौं ३ ब्रह्म ज्ञान बिशेख जिन याजग प्रगटित कियो। मुकुर कोउजिमिदेख निजअवयव पूरण सबै ४ मुक्ति बिना नहिंज्ञान वेद कहत याबिधि सबै। श्रुतिन मध्यपरमान एक अहौं मैं बहुत पुनि ५ जिमि सूरज आकाश एक अहौं दूजेनहीं। देखिय अमित प्रकाश रूपजल स्थाननविषे ६ जिमि मारुत है एक ब्यापिरहो संसार सब। तैसे ईश अनेक ब्यापे घट घट एक नतु ७ जिमि घटमें आकाश प्राप्त भयो लखि परत है। घटनाशे घटनाश त्रियताब्यय जानिय सदा ८ अजरामर तिमिईश जगनाशे नाशै नहीं। भाषत बचन ऋषीश ÷ ज्ञान चक्षु अवलोकिये ९ ज्ञान ध्यानकी रीति ग्रंथन में बहुबिधि कही। धारिहिये परतीति पाइय मारगको अवशि १० चौ०। सुजन प्रिया ग्रंथमें गावा। ज्ञानध्यान मारग दरशावा॥ अरु संसार बिमोचनि नामा। बरणी ज्ञान ध्यान की सामा ११ तातें इहाँ नबरणौं सोई। देखिलेउशुचि सज्जन जोई॥ यानिष्ठा जेभक्त कहाये। बरणौं तिनके नाम सुहाये१२॥

चौ०।कथा बशिष्ठ केरि शुभएहा। बरणौंधरि रघुबर पदनेहा॥ ब्रह्माके दशपुत्र मँझारा। भगवत भक्त भये सुखसारा १३ ज्योतिष आयुर्वेदहु सोई। अरु सांगीत कहावत जोई॥ तिन में बहुसंहिता बनाई। जगदानन्द हेतु सुखपाई १४ पर बिशेष उनका अधिकारा। धर्मशास्त्र ज्ञानहू अपारा॥ भक्ति शास्त्रमें अधिक कहाये। अन्तरिक्ष हरिध्यान लगाये १५ पुनि दूजे ब्रह्माण्डम जाई। ब्रह्माणी कीकरी सहाई॥ हेतधर्म परवर्ति सहाई।

÷ ऋषीश वेद ऋषिरा॥

तीनिरूप निज लीन्ह बनाई १६ ब्रह्मलोक में एक रहावैं। दूजे धर्म सभा सुखपावैं॥ तीजे सप्तऋषेश्वरमाहीं। धर्म प्रकाश करैं बहुधाहीं १७ बिश्वामित्र देखि तपभारी। राज्यछोड़ि मानसतपधारी॥ नहिं नन्दिनी धेनु जबपायो। नहिं बशिष्ठ ब्रह्मर्षि सुनायो १८ सोई बैरधारिमन लीन्हा। बधशत अंगज तिनके कीन्हा॥ तबहूँ नहिं बशिष्ठ मन माहीं। रंचक्रोध कीन्हों तिन पाहीं १९ ब्रह्मा सों सुनि पायो सोई। श्री सच्चिदानन्द घन जोई॥ सूर्यबंश लेहैं अवतारा। सुनि बशिष्ठ आनँदउरधारा २० प्रोहित भये जाइ तिहि बंसा। दरश लागि रघुकुल सर हंसा॥ जब अवतार लीन्ह हरि आई। पूरण सिद्धि जन्मकी पाई २१॥

चौ०। श्री रघुबर पद शीशनवाई। कहौं गाधिसुत कथा सुहाई॥ क्षत्रीबंश जन्म तिन लीन्हा। चाह धेनु नन्दिनिकी कीन्हा २२ गे बशिष्ठ ऊपर सो धाई। सेना प्रबल लीन्ह सजवाई॥ हरी गई सेना तिन भारी। बिश्वामित्र रहे मनुमारी २३ प्रबल प्रताप विप्र कर देखी। आपुहि जानो तुच्छ बिशेखी॥ भगवत भक्ति प्रताप महाना। राज्य छोंड़ि मनगुणि तपठाना २४ भगवत भजन करन सो लागे। लाखन बरषै मन अनुरागे॥ ऐसो कियो घोर तप काहीं। भे ब्राह्मण क्षत्रीतन माहीं २५ ऐसो भयो भक्ति बल जिनके। इच्छा होत भई यह तिन के॥ की दोसर ब्रह्माण्ड बनावैं। या बिधि जग निज नाम चलावैं २६ एकसमय बिधि सो रुट धरिकै। लागे रचन अण्ड मुद भरिकै॥ बहुत बस्तु बिरची तिन जबहीं। आये सकलदेव मिलि तबहीं २७ क्रोध शांत कीन्हों तिनकेरा। चित्त तबहिं रचना सों फेरा॥ भूप त्रिशंकु अवधपुरमाहीं। स्वर्ग सदेह पठायो ताहीं २८ देखि इन्द्र मन क्रोधबढ़ाई। दीन्ह त्रिशंकुहि भूमि गिराई॥ कीन्ह पुकार गिरन जब लागा। बिश्वामित्र सुनी ता बागा २९ तप बल धारि गिरन नहिं दीन्हो। निराधार महँ आस्थिर कीन्हो॥ स्वर्गति इन्द्र निकारन चाहा। सुरन

आइ बिनती बहु काहा ३० बिश्वामित्र दया मन आई । देव गये निज भवन सिधाई ॥ एकसमय बहुपरो अकाला। भोजन कछु न मिलो तिहिकाला ३१ बहुदिन तिनहिं बीति जब गयऊ। इक चाण्डाल मांस लै दयऊ॥ खाद्य बिचारि ताहि लै आये। करि मज्जन चह भोगलगाये ३२ ध्यानम हरिअर्पण चित दीन्हा। लखि निजभक्त दया हरि कीन्हा॥ तिन समाधि लागी तिहिबारा। भगवत बर्षा करी अपारा ३३ भये हरित बन बाग सुहाये। बिबिध धान्य फल फूल महाये॥ भयोपल-लकुजपनस नवीना। त्यागि समाधि गाधिसुत दीन्हा ३४ कीन्ह प्रणाम हरिहि सुखपाई। क्षुधा शांत कीन्हो फल खाई ॥ याबिधि हैं तिन चरित माहना। जियालाल संक्षेप बखाना ३५॥

चौ०। भरत नृपतिकी कथासुहाई। यहबरणौं भक्तन सुख-दाई॥ ऋषभदेवके पुत्रसुहाये। भगवत भक्त श्रेष्ठ कहि गाये ३६ भरताहि राज्यदीन्ह सुखपाई। ऋषभदेवगे बनहिसिधाई॥ राजा भरतभये सुखखानी। पितासमान प्रजाहि मुददानी ३७ बिश्वरूप कन्या सुखधामा। उपयेमेसु पंचजनिनामा॥ जनयामास पुत्रता माहीं। निज प्रतिबिंब मनहुतेआहीं ३८दो०। सुमतिसुदर्शन राष्ट्र भृतधूम्रकेतुआवरण। पांचपुत्र गुण शीलयुत सकल लोक आभ-रण ३९धर्म सुयश नृप भरतको छायो भूमिअकाश। अजहुँ बर्ष यह करत हैं ताको सुयश प्रकाश४० चौ०। प्रजाप्रवर्त स्वकर्म सदाई। ह्रास स्वधर्मन होत कदाई॥ तिनहिं सबहु बिन्नृ-पसबकाला। उरुवत्सलता सो प्रतिपाला ४१ यज्ञरूप भग-वन्तहिईजे। +उच्चावचक्रतुसो मुद भीजे॥ अग्निहोत्र की-न्हे युत श्रद्धा। पूर्ण मास दर्शहु पुनि अद्धा ४२ चातुर्मास्य सोम पशु नामा। प्रकृति÷ बिकृतिकरिकै सुखधामा॥ †मृदित

+उच्चावचमहदल्पश्चेतिक्रतवःसयूपाः ÷प्रकृतिविकृति अग्निहोत्रादयोद्विविधाः सकलांगयुक्ताः प्रकृतयःविकलांगाविकृतयः †यज्ञाःअल्पःमृदिताःक्षीणाः ॥

* कषाय नृपति याभांती । किये यज्ञदियहरि सुख पांती ४३एवं कर्म शुद्ध बुधिकरिकै । हृदयाकाश सत्त्वमुद भरिकै ॥ भगवत ब्रह्मरूप सुख खानी । बासुदेव जिहि बेद बखानी ४४ तासु रूप देखो सुखधामा । कौस्तुभ मणि श्रीवत्स ललामा ॥ बनमाला उर मध्यसुहाई । चक्रगदा † दरजन सुखदाई ४५ बर्षा युतसहस्र पर्य्यन्ता । हरि भजि राज्य कियो श्रुति यन्ता ॥ पुनि संपति सों मन बिलगाई । निज पुत्रन दिय भागलगाई ४६ नृपैश्वर्य्य तत्त्वण तजि दीन्हे । पुलहाश्रमहि गमन पुनि कीन्हे ॥ तहँ बासीजन के हितकारी । अजहुं बसत जहँ रमाबिहारी ४७ करत पवित्र चक्रनहिं जहँवां।जाइ बास कीन्हो नृप तहँवां ॥ पुलहाश्रम उपबन अति सोहै । बिबिध कुसुम तरुवर मनमोहै ४८ किशलय तुलसिअम्बु सुखरासी । कन्दमूलफल प्रभाप्रकासी ॥ बास बिबिक्त बिषय उपरामा । पायो परम निर्बृत्ति ललामा ४९ इमि भगवत परिचर्य्या माहीं । उरानुराग प्रवर्द्ध सदाहीं ॥ बेग प्रहर्ष शिथिलता करिकै । रोमपुलक उत्कण्ठा भरिकै ५० अरुण चरण अरबिंद सुहाये । ध्यान भक्ति सौमानस लाये ॥ परमाह्लाद गँभीर सुहावा । हृदय हृदासुपूर्ण करिछावा ५१ ऐसे भगवत ध्यान लुभाने । हरि परिचर्य्या काहँ भुलाने ॥ घृतऐणे या जिन सुखराशी । कपिश कुटिल कच प्रभा प्रकाशी ५२ प्रात उदय सूर्यनको देखी । या बिधि बोले बचन विशेखी ॥ हे सूरज मैं शरण तुम्हारी । रजस प्रकृति पर वेद बिचारी ५३ शुचि सत्त्वात्मक रूप तुम्हारा । तेज स्वरूप भूत सुखराश ॥ हे सविता कर्मन फलदायक । मनसों रचिजग प्रकट सहायक ५४ करि प्रवेश या जगत मँझारा । चेतन शक्ति ‡ हंसप्रतिपारा ॥ इमि तपकर समोद सहभावा । एक समय कर चरित सुहावा ५५ कूल महानदिके सो गयऊ । ‖ नैयमिका

---

* कषायाःरागादयो यस्य † दरशंख ‡ हंसो ‖ नैयमिकंनित्यनैमित्तिक बिधिप्राप्तं

* वश्यक नृपकयऊ॥ कृताभिषेक प्रणव मनधारा। त्रयमुहूर्त्त मध्युदक बिचारा ५६ तहँ प्यासी हरिणी इकआई। अम्बुपियनलागी सुखपाई॥ सिंहनाद ताही क्षणकीन्हो। लोक भयंकर सुनिभय चीन्हो ५७ प्रकृति बिक्क वा मृगी सदाई। चकितनिरीक्ष्य सिंह भयपाई॥ व्यग्रहृदय † पारिप्लवदृष्टी। ‡ अगत तृषा बिलोकि भयवृष्टी ५८ लांघतभै सो नदी अपारा। गर्भवती व्याकुल तनभारा॥ कूदि गिरी सरिता मधि जबहीं। गर्भपपातयोनि मगतबहीं ५६ गई मृगी सरिता के पारा। स्वगण बियुज्य मान दुखभारा॥ गिरीदरीमहँ मरीसशोका। यह चरित्र नृप भरत बिलोका ६० बहतधार मृगि बालक देखी। तिनउर उपजी दया बिशेखी॥ ताहि निकारि निजाश्रमलाये। गुनि अनाथ अति प्रेम बढ़ाये ६१ ॥ पोषण ¶ पालन § लालन † प्रीड़न। करत जानि बालक सँग क्रीड़न॥ आत्म नियम यमछूटनलागे। हरि परिचर्य्या पुनि कछुत्यागे ६२ कछुक दिवस महँ सबताजिदीन्हा। पूरण प्रेम हरिण सों कीन्हा॥ शयनाशनाशनाटन जोई। सह मृग करत नेह युतसोई ६३ दो०। समित कुसुम फल मूलकुश पत्रतोय हितजाहिं। बृक साला वृकभय निरखि संग ताहिलैजाहिं ६४ चौ०। याविधि बीतत भे बहुकाला। एक दिवसकर भो असहाला॥ मृगगण देखि मृगाकहुँपायो। तत्क्षण तिन मधिजाइ समायो ६५ देखो भरत न आश्रम जबहीं। बिबिध बिलाप करत भे तबहीं॥ कछुक दिवस बीते या भाँती। मृगमें ध्यान रहत दिनराती ६६ कालावसर नृपति को आयो। तबहूँ मृगमें चित्तलगायो॥ मृगमनधारि तजो तनजोई। एणकुणप पावत भे सोई ६७ छन्द रामगीतिका। भगवदर्च प्रताप तिनको नहीं भूलाज्ञोन। आहमानसतप्यमान सुअहो कष्टमहान॥ भ्रष्ट हम अतिहोत

---

* आवश्यक मर्थप्राप्तं मूत्रोत्सर्गादि † पारिप्लवदृष्टी संभ्रांतनेत्रा ‡ अगत तृषानगता तृषायस्याः ॥ पोषणं तृणादिना ¶ पालनं वृकादिभ्यो रक्षणं § लालनं चुंबनादिना † प्रीड़नं कंडूयनादिना॥

मे तजि संगहू दुखदान। श्रवण कीर्त्तन मननकीन्ह अपराध नाहरि ध्यान ६८ तबहुँ दुख यहपरतभो दुखदानि संग सदाइ। त्यागिहों अब सकल संगन पुनि नहोइकदाइ ॥ गूढ़ दुख या भाँति तत्त्वण मृगी मातर त्यागि। त्यागि कालंजरगये सो पुलह आश्रम भागि ६९ पुलह आश्रमहूबिषे अतिसंग सों भय खात। शुष्कबीरुध तृणहु भोजन करत सूखेपात। वर्त्तमान मृगत्व चाहत नित्यही अवसान। उत्ससर्ज शरीर तीरथ पाथ धरिहरि ध्यान ७० दो०। द्विजबरांगिर प्रवरके मृगशरीर तजिसोइ। पुत्र होत भेबिप्रकुल शमदम धारकजोइ ७१ द्वेजायाङ्गिर प्रवर के जेठी के नवपूत। भये कनिष्ठाके मिथुन तजि एणाङ्गासूत ७२ कन्या दूजीहोतभै इमिलहि विप्रशरीरास्वजन संग सों नित्य भय करत बिप्रबरधीर ७३ चौ०। भगवत चरण चित्त निजलाये। सुमिरण श्रवण नित्यगुणगाये॥ निज प्रति घाताशंकमान्न पुनि। पूर्बजन्म अवलीमानसगुनि ७४ समउन्मत्त जंडांधबधीरा। दरशायो निज लोक शरीरा ॥ किय सँस्कार पिता पुनि तबहीं। शौचाचार सिखायो सबहीं ७५ कछु दिनमाहँ पितातजदेहा। ता गतिगई मातु युतनेहा ॥ भ्राता तिन प्रभावं नहिंजानैं। जड़वत बधिर मूकवतमानैं ७६ छन्द रामगीतिका। तिरस्कारहु करनलागे भोजनादिक माहिं। तबहुँ येकछु इन्द्रियादिक सुखन को गननाहिं॥ मिष्ट अन्न * कदन्न अल्पहुसात आनँदपाइ। नित्य सिद्ध बिशुद्ध अनुभव रहो सुखउरछाइ ७७ स्वात्मलाभहि प्राप्त सुखदुख द्वंद्व गत अभिमान। शीतउष्णहु बातवर्षा बृषभ इवपहिंचान ॥ अनावृत है अंग जिनको † पीनहै सबकाल। ‡ रजस मज्जन महामणिरिव ॥ ब्रह्मवर्चसपालं ७८ ¶ कुपट आबृत § ऊरुम्पिणा ब्रह्म बंधुलाखत। गुनाभाइन नित्यहीयहवृथा भोजन खात ॥ अशन लोभीदेखाइ तिन † केदार कारजहेत। कियो

* कदन्नं कुत्सितान्नं † पीनस्थूल ‡ रजःधूलिः ॥ ब्रह्मवर्चसब्रह्मतेज ¶ कुपटकुत्सितवस्त्र § ऊरुमषिणाअतिमालिनेन † केदारकारजशालिक्षेत्रेकर्दम विलोडनादौ